भारतीदासन की सौ कविताएँ

हिन्दी अनुवाद

HUNDRED POEMS OF BHARATIDASAN

(A Translation from original Tamil into Hindi)

WITH COURAGE AND FAITH

अण्णामलै विश्वविद्यालय
अण्णामलैनगर
1993

HUNDRED POEMS OF POET BHARATHIDASAN

A Translation from Tamil

by

Dr. AHAMAD HUSSAIN

Prof & Head, Dept of Hindi,

Annamalai University

ANNAMALAI UNIVERSITY

Annamalainagar

1993

भारतीदासन की सौ कविताएँ

तमिल से हिन्दी में अनुवाद ।

डॉ. अहमद हुस्सेन,

प्रोफ़ेसर व अध्यक्ष,

हिन्दी विभाग

अण्णामलै विश्वविद्यालय

अण्णामलै विश्वविद्यालय

अण्णामलैनगर

1993

First Edition : 1993
© Annamalai University,

Bharathidasan Centenary Celebration Publication

Price : 50.00

Copies can be had from :
The Publications Division
Annamalai University
Annamalainagar 608 002

Typeset and printed by :
Triveni Printers, Madras-600 002.
Phone: 831073

FOREWORD

Bharatidasan is a great poet of the twentieth century. He is known as a poet of revolution, Cuckoo of Pondicherry and disciple (daasan) of Subrahmanya Bharati. His poems are the admixture of realism, revolution, melody and social reforms. They inspire the quality of integration for the vast sea of humanity. His poems are light, simple and mellifluent which invariably carry a subtle message of social reforms. If Subrahmanya Bharathi was the poet who lit the flames of freedom in the hearts of men, Bharatidasan was one who lit the flames of social reform and social justice.

Bharatidasan is an embodiment of Tamil and a reincarnation of Tamil heroism. It is no exaggeration when said that Tamil entwined itself very much into his emotions, life, speech, breath, writings and thoughts. It is rare to come across a self-respecting poet such as Bharatidasan. This poet of emotions may well be ranked with the galaxy of great poets of the world. It is he alone who rightly gets the sur-name of 'revolutionary' in the long list of the great Tamil poets. He is a peerless gift from the spark and flame of the Dravidan movement.

One hundred select poems of this great poet were chosen by his loving son for Hindi translation. The work was accomplished by our Hindi Professor Dr. Ahamed Hussain, This is a humble tribute paid by our University to the poet, on the occasion of his Birth Centenary celebrations.

Literature is nothing but the reflection of human feelings. A poet is he who drives deep into the fathom of human feelings, and chisels the sculpture of the Muse with the tools of human emotions. A poet is he who forms the tools of human emotions. A poet is he who forms the summum-bonum of the essential charateristics of the human feelings. In this sense, Bharatidasan is a real poet.

In his poems, we see the society in which he lived. He advocated widow re-marriage. He preached the norms of Family Planning, long before we propagated, to ensure the health of the women and the wealth of the family. He stood for universal brother-hood. He was for the communal harmony. National Integration was his theme. He dreamt of a strong India, free of the shackles of communalism, linguism, regional-

ism and fissiparous tendencies. He wanted a world wherein every one got everything including wealth, health, education, justice and self-fulfilment. He wished the nation to be economically superior by way of rapid industrialisation. He was for the opening of Fair price-shops by the Government for the sake of the economically poor. He propagated the idea of technical education for the betterment of the youth of this country. He believed in the benefits of literacy programmes for the masses.

Bharatidasan who always thought of the uplift of the human society also sang of the beauty of the nature. His aesthetic sense of the nature deserves to be compared with the works of Wordsworth, Shelley, Keats and Byron. He experienced a divine pleasure while witnessing the enthralling beauties of the Nature in the rays of the sun at dawn, expanse of the sea, glitter of the lights, greeny bushes and meadows, lovely flowers and off-shoots, sandy beds, roaring waves, silver coloured swans floating on the mirror like waters of the lakes, pearls-like-water drops shining on the petals of the lotus, the gentle blowing wind, the humming noise of the swarming black bees, the lighter and regularly repetitive vocals of the pigeons, the sky-breaking lightnings, deafening thunders, the drops of the rain which produce the sweet strings of the Indian flute, the heart stealing and stunning handsomeness of the rain-bow and the chirpings of the band of birds sitting atop the branches of the mighty Banyan trees at the time of the sun-set. It is a rich feast to our inward eyes to see the mystic nature through the lively descriptions of the poet.

I whole heartedly congratulate our Hindi Professor Dr.Ahamad Hussain who has ably and realistically translated the niceties of the poems of Puratchi Kavi Bharatidasan into Hindi.

I hope and trust that the translations of this kind will go a long way owards fostering National and emotional integration.

Dr. M.G. Muthukumarasamy.
Vice-chancellor,
Annamalai University.

आभारोक्ति

तमिल के महाकवि श्री भारतीदासन के जन्म– शताब्दी – समारोह के संदर्भ में, हमारे विश्वविद्यालय की सिन्डिकेट ने, उनकी सौ कविताओं का हिन्दी अनुवाद कराने का निश्चय किया ।

भूतपूर्व उपकुलपति महोदय डॉ. टी. सी. मोहन ने यह कार्य मुझपर सौंपा ।

वर्तमान उपकुलपति महोदय डॉ. एम. जी. मुत्तुकुमार स्वामी ने इस ग्रन्थ के लिए प्राक्कथन लिखकर अनुग्रह किया ।

तमिल विभाग के अध्यक्ष और भारतीय भाषा संकाय के अध्यक्ष डॉ. आ. रु. अऴगप्पन थे । उनसे मुझे मदद मिली ।

महाकवि भारतीदासन के सुपुत्र श्री मन्नर मन्नन ने अनुवाद के लिए सौ कविताएँ चुन उठाने की कृपा की ।

तमिल विभाग की रीडर डॉ. (कु). उण्णामलै से तमिल कविताओं की भावानुभूति को परख पाने में पूर्ण सहयोग मुझे प्राप्त हुआ ।

प्रकाशन विभाग के श्री वी. लक्ष्मणन् ने भी सहायता की ।

त्रिवेणी प्रिन्टर्स, मद्रास ने इस ग्रन्थ की छपाई सुन्दर ढंग से की ।

– इन सभी के प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञताएँ ।

अहमद हुस्सेन ।

महाकवि भारतीदासन ।

भारतीदासन का जन्म अप्रैल 9, 1891 को पाण्डिच्चेरी राज्य में हुआ। इनका असली नाम कनक सुब्बुरत्नम था। इनके पिता का नाम कनगसबै और माता का नाम लक्ष्मी था। इनके एक भाई, एक बडी बहिन और एक छोटी बहिन भी हैं। उन्होंने पाँच वर्ष की आयु में तिरुप्पुलिस्वामी नामक अध्यापक से प्रारंभिक विद्य प्राप्त की। बहुत छोटी उम्र से ही वे कविता लिखने लगे। तेरह वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात उन्होंने व्याकरण, साहित्य, वेदान्त, दर्शन आदि का अध्ययन प्रख्यात विद्वान " पु. अ. पेरियस्वामीजी और बंगारू जी " के निर्देशन में किया था। सत्रह वर्ष की उम्र में उन्होंने फ्रेंच-भारत की " तमिल विद्वान परीक्षा " प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

सन् 1908 में भारतीदासन ने सर्वप्रथम तमिल के महाकवि श्री सुब्रह्मण्यं भारती से भेंट की। यह भेंट श्री वेणु नायक्कर के घर में संपन्न हुई। भारतीदासन किसी ब्याह में भाग लेने केलिए तब वहाँ गये थे। अध्ययन के उपरान्त, भारतीदासन कारैक्काल नामक शहर में अध्यापन कार्य करने लगे। सरकारी अध्यापक होने पर भी उन्होंने " इंदिया " नामक प्रत्रिका के प्रकाशन में आंतरिक रूप से मदद की। उन्होंने भारतीजी, व.वे.सु. अय्यरजी, डॉ. वरदराजुलुजी, अरविन्दरजी, आदि साहित्यक मनीषियों और स्वातंत्र्य संग्रम योद्धाओं को भोजन, धन, और निवासस्थान आदि जुटाकर उनकी सहायता की।

सन् 1916 में इनके पिता का देहान्त हो गया। उसके बाद पुदुच्चेरी की तमिल पत्रिकाओं में वे " के. एस. आर. ", " कण्डेलुदुवोन " " किरुक्कन ", " किण्डलकारन ", " के. एस. भारतीदासन " आदि नामों से लिखा करते थे। वे " सुब्ब्रमण्य भारतितियिन कविता मण्डलम ", " मुल्लै ", " कुयिल ", " तुप्पलेचु ", " पुदुवै मुरसु " आदि आठ तमिल पत्रिकाओं के संपादक भी बने।

सन् 1917 में जब वे तिरुभुवनम में काम करते थे, तब फ्रेंच सरकार ने इन्हें देशद्रोही घोषित करके कैद कर लिया। डेढ़ साल के लिए वे जेल भेजे गये। जेल से मुक्त हो जाने के बाद वे खद्दर पहनकर स्वाधीनता-संग्रम में भाग लेते हुए कडलूर शहर की गलियों में घूम घूमकर खादी बेचने लगे।

खादी पहनने के कारण डेढ़ साल के लिए उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। उसके बीच वे पाँडिचेरी विधान-सभा के सदस्य और सभापति भी बने।

सन् 1920 में इनका विवाह पलनिअम्माल नामक कन्या से हुआ। इनकी " सरस्वती ", " वसन्ता " " रमणि " आदि तीन लडकियाँ हैं। " मन्नर्मन्नन " नामक एक लडका भी है। सन् 1928 तक वे काँग्रेस के स्वातंत्र्य संग्राम में शामिल रहे। उसके बाद काँग्रेस से अलग होकर वे ई.वे.रा पेरियार के द्राविड कलगम में सपरिवार शामिल हुए।

सन् 1934 में " चिंतामणि " नामक नाटक लिखकर उन्होंने उसका निर्देशन भी किया। उसके बाद उन्होंने काव्य, इतिहास, समाज आदि विषयों पर 19 नाटक लिखे। उन्होंने " कादला ? कड़मैया ? " (प्रेम

अथवा कर्तव्य) " कड़ल मेल कुमिलिकल " (सागर के बुदबुंदे), " तमिलच्चियिन कत्ति " (तमिल नीरी की चाकू), " कण्णकी पुरच्चि काप्पीयम " (कण्णकी का विप्लव काव्य), " मणिमेकलै वेण्बा " (मणिमेकलै काव्य) आदि काव्य भी लिखे ।

सन् 1937 में सिनेमा जगत से जुड़कर, उन्होंने " इरामानुजर ", " बालामणि " " बागदाद तिरुड़न " (बागदाद का चोर), " कवि काल मेघम् ", " सुभद्रा ", "सतीसुलोचना ", " आयिरम् तलै वांगिय अपूर्व चिन्तामणि " (सहस्र शिरच्छेद करनेवाली चिन्तामणि) " पोन्मुड़ी ", " वलैयापति " आदि आठ सिनेमाओं के लिए कथा, वचन, गीत, आदि लिखे । चलचित्र सीमा में प्रवेश करने के सोलह वर्षों के बाद "भारतीयार " पर सिनेमा बनाने की योजना उन्होंने बनायी । लेकिन अपना सपना साकार होने के पहले ही मद्रास में उनका देहान्त हो गया ।

वे जीवन के आरंभ काल में काँग्रिसवादी बनकर, बाद में हेतुवादी बने । अपने अंतिमकाल तक वे हेतुवादी ही बनकर रहे । इनको अपने " पुरच्चिकवि " (विप्लव कवि) नामक ग्रन्थ पर रु. 25,000/- का पुरस्कार मिला । " पिसिरांदैयार " नामक पुस्तक पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और रु. 5,000/- इन्हें प्राप्त हुए ।

हरेक वर्ष इनके नाम पर पांडिचेरी सरकार मेला मनाती है । पाँडिच्चेरी में कवि के नाम पर एक पुस्तकालय और एक प्रदर्शनी भी हैं । पांड़ि सरकार ने इनकी एक मूर्ति भी नगर के चौराहे पर स्थापना की है । सन् 1968 में मद्रास नगरपलिका ने इनकी एक मूर्ति की स्थपना मद्रास के सागर तट पर की है । इनकी मृत्यु के अठारह वर्षों के बाद,

सन् 1982 में तिरुच्चि में भारतीदासन विश्वविद्यालय खोला गया। आठ वर्षों के बाद उसी विश्वविद्यालय में उनकी एक मूर्ति की स्थापना की गयी। सन् 1990 में उनकी समस्त कृतियों का जातीयकरण तमिलनाडु सरकार से किया गया है। इसी वर्ष में उनके पुत्र मन्नर् मन्नन् ने " करुप्पुक्कुयिलिन नेरुप्पुक्कुरल " (काले कोयल की आग भरी आवाज) नामक ग्रन्थ का प्रकाशन किया। यह ग्रन्थ भारतीदासन के जीवन से संबंधित है।

मद्रास विश्वविद्यलय में " महाकवि की पत्रिका-सेवा " " भारतीदासन की कथा कविताएँ ", " भारतीदासन की कविताओं में हास्य ", " भारतीदासन और वाणीदासन की कविताओं में प्राकृतिक दृश्य ", " भारतीदासन की जीवनी ", " भारतीदासन और वोर्डस्वोर्थ ", " तमिल कविताओं में भारतीदासन " " भारतीदासन एक योद्धा कवि ", " भारतीदासन की कविताओं में पेरियार का दर्शन और मार्क्सवादी विचार " " भारतीदासन कविताओं में नारी पात्र ", "भारतीदासन कविताओं में हेतुवाद " आदि बारह विषयों पर अनुसंधान कार्य चल रहा है।

मदुरै कामराजर विश्वविद्यालय में " भारती और भारतीदासन " शीर्षक पर, अण्णामलै विश्वविद्यालय में " भारतीदासन : एक अध्ययन " शीर्षक पर और भारतीदासन विश्वविद्यालय में " भारतीदासन और पेरूमूंचित्तनार " आदि शीर्षकों पर अनुसंधान चल रहे हैं।

" भारतीदासन की कविताओं में सामाजिक विचार " " भारतीदासन की रचनाओं में हास्य ", " भारतीदासन की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन " " पावेन्दर पिल्लैतमिल " " पुरच्चिक्कवि भारतीदासन की

कविताओं में श्रमिक लोग" "भारतीदासन के बाद के कवियो ं का मानसिक संग्राम ं" "भारतीदासन की रचनाओं में नारी पात्र" "शिलप्पतिकारमुम कण्णकी पुरच्चियक्कापपियमुम्" तथा "भारतीदासन के निबन्ध - एक अध्ययन" आदि विषयों पर तमिलनाडु के विविध विश्वविद्यालयों में अनुसंधान कार्य जारी हैं ।

तमिल विद्वानों ने पावेन्दर के बारे में 77 से अधिक निबन्ध लिखे हैं । नई दिल्ली, तिरुनेल्वेली, शूलूर आदि स्थानों में पावेन्दर के नाम से पत्रिकाएँ चलती हैं ।

तमिलनाडु सरकार ने सन् 1978 से लेकर 1990 तक, पैंतालीस विद्वानों और कवियों को पावेन्दर पुरस्कार से विभूषित किया है । तमिल भाषा की उन्नति, हेतुवाद की दृष्टि, ब्राह्मण विद्रोह, स्त्री दासता, जाति धर्म विद्रोह, सार्वजनिक सामाजिक संगठन, आदि तत्व इनके जीवन में और इनकी साहित्यिक रचनाओं में प्रतिबिंबित होते हैं ।

TRANSLATED POEMS OF POET BHARATHIDASAN

இந்தி மொழியில் மொழி பெயர்க்கப்பட்ட பாரதிதாசன் கவிதைகள்

1. எங்கெங்குக் காணினும் சக்தியடா 1
2. மக்கள் நிலை 2
3. எந்நாளோ 6
4. சங்கநாதம் 8
5. கைம்மைப்பழி 9
6. குழந்தைமணத்தின் கொடுமை 11
7. தவிப்பதற்கோபிள்ளை 13
8. உலக ஒற்றுமை 16
9. பேரிகை 17
10. தளைஅறு 19
11. கூடித் தொழில் செய்க 21
12. தொழிலாளர் விண்ணப்பம் 23
13. மாண்டவன் மீண்டான் 26
14. மானிட சக்தி 28
15. முன்னேறு 30
16. உலகப்பன் பாட்டு 31
17. கோடையின் வெப்பமும் மழையின் வருகை 33
18. வியர்வைக் கடல் 34
19. நீங்களே சொல்லுங்கள் 37
20. புதிய உலகு செய்வோம் 39
21. சகோதரத்வம் 40
22. வாளினை எடடா 42

23. சுதந்திரம் 44

24. இசைத் தமிழ் 45

25. அழகழகாய் 47

26. சாவாத உழவன் 48

27. சோலை தரும் நன்கொடை 49

28. எலிகள் 50

29. காந்தியடிகளும், சூதரும் 52

30. வண்மைசேர் தமிழ்நாடு 53

31. நீயறியாயோ நிலவே 54

32. படலடிப்பவன் 55

33. கருத்தடை மருத்துவமனையில் ஒருத்தியின் வேண்டுகோள் 56

34. மதம் எதற்கு 57

35. அறிவுகெட்டவன் 58

36. இந்தநூற்றாண்டு 59

37. வாணிகத்தை அரசினரே நடத்த வேண்டும் 61

38. திருடாதே 62

39. விடுதலை வேட்கை உயிரின் இயற்கை 63

40. தொழிலே எழில் 65

41. வறுமை ஒழிப்பு 67

42. வீடுண்டு விளக்கில்லை 69

43. அழியாப் புகழ் 70

14. மொழியின்றேல் நாம் யார் 71

45. இயற்கையில் இல்லை மனிதருக்கு ஏன்? 72

46. வீறுடன் நில் 73

7. கல்வி பயில் 74

'8. இயற்கைச் செல்வம் 75

49. அதிகாலை 77
50. வானம்பாடி 78
51. மாவலிபுரச் செலவு 79
52. இருசுடரும் என் வாழ்வும் 83
53. தென்றல் 84
54. கதவு பேசுமா? 86
55. பாரதி உள்ளம் 87
56. பாரத நாட்டின் விடுதலை வேண்டல் 88
57. அறம் செய்க 89
58. குழந்தை 90
59. குழந்தைப் பள்ளிக்கூடம் தேவை 91
60. படி! படி! படி! 93
61. வாழ்வு 95
62. கொட்டு முரசே 97
63. இங்கே உண்டு 99
64. அன்னையின் ஆவல் 101
65. எது தம்பி வேண்டும் 103
66. வாய்மை முரசு 104
67. வண்டிக்காரன் 106
68. பாவோடும் பெண்கள் 107
69. தறித்தொழிலாளிநினைவு 108
70. உழத்தி 109
71. ஆலைத் தொழிலாளி 110
72. இரும்பாலைத் தொழிலாளி 111
73. கூடைமுறம் கட்டுவோர் 112
74. குறவர் 114
75. தபாற்காரன் 115

76. சிறார் பொறுப்பு 116
77. இன்பம் 117
78. அன்பு 118
79. நிலா 119
80. உலகின் நோக்கம் 120
81. தமிழ் 122
82. பெண் கல்வி 123
83. தந்தை பெண்ணுக்கு 124
84. ஆண் பெண் நிகர் 125
85. உழைக்கும் வர்க்கம் 126
86. கிழியட்டும் பழம் பஞ்சாங்கம் 127
87. கட்டாயக் கல்வி 128
88. தமிழன் 129
89. அழகு 130
90. கடல் 132
91. குன்றம் 136
92. ஆறு 140
93. செந்தாமரை, நீர், இலை, நீர்த்துளிகள் 144
94. ஞாயிறு 148
95. ஆல் 152
96. புறாக்கள் 156
97. இருள் ....160.
98. சிற்றூர் 164
99. பட்டணம் 168
100. பாரததேவி வாழ்த்து 172

कविता - सूची

		पृष्ठ
1.	हर कहीं देखो तो शक्ति है।	1
2.	प्रजा की दशा।	2
3.	यह होगा किस दिन?	6
4.	शंखनाद !	8
5.	वैधव्य की निन्दा।	9
6.	बाल–विवाह की क्रूरता	11
7.	क्या बच्चे हो दुःख भोगने?	13
8.	संसार की एकता।	16
9.	भेरी !	17
10.	हो उन्मूलन !	19
11.	मिल कर करो व्यवसाय	21
12.	श्रमिकों की प्रार्थना।	23
13.	मृत का पुनर्जीवन !	26
14.	मानवता की शक्ति !	28
15.	बढ़ आगे !	30
16	उलगप्पन का गीत।	31
17.	ग्रीष्म की कटुता और वर्षा का आगमन।	33
18.	स्वेद सागर।	34
19.	तुम ही कहो।	37
20.	नई दुनिया बसाएँगे !	39
21.	भाईचारा।	40
22.	तलवार उठा रे !	42
.23.	आज़ादी।	44
24.	संगीतात्मक तमिल।	45
25.	सुंदर ढंग से।	47

		पृष्ठ
26.	अमर्त्य किसान ।	48
27.	चमन का महादान ।	49
28.	चूहे ।	50
29.	महात्मा गाँधी और खादी ।	52
30.	बल–संपन्न तमिलनाडु ।	53
31.	चंदा! तुम क्या नहीं जानते ?	54
32.	बाडी बननेवाला ।	55
33.	परिवार–नियोजन–अस्पताल में एक नारी की प्रार्थना ।	56
34.	धर्म काहे को ?	57
35.	बुद्धिहीन ।	58
36.	यह शताब्दी ।	59
37.	वाणिज्य, सरकार के अधीन हो ।	61
38.	मत चुरा ।	62
39.	आज़ादी की चाह जीव के लिए सहज !	63
40.	व्यवसाय ही सुन्दर !	65
41.	दरिद्रता का नाश ।	67
42.	मकान है, दीप नहीं ।	69
43.	अक्षय–कीर्ति	70
44.	बिनु भाषा, हम क्या हैं ?	71
45.	प्रकृति में नहीं, मनुष्य को क्यों ?	72
46.	वीरता से खड़ो ।	73
47.	शिक्षा पाओ ।	74
48.	प्रकृति–संपदा ।	75
49.	प्रभात ।	77
50.	गगन–गायक ।	78
51.	महाबलिपुरम् की यात्रा ।	79
52.	सुबह–शाम और मेरा जीवन ।	83

पृष्ठ

53. पवन । 84
54. दरवाज़ा बोलता है क्या ? 86
55. भारती का ह्रदय । 87
56. भारत देश को आज़ादी चाहिए । 88
57. धर्म करो । 89
58. बच्चा । 90
59. बच्चों की पाठशाला चाहिये । 91
60. पढ़ो ! पढ़ो ! पढ़ो ! 93
61. जीवन । 95
62. ढंका बजाओ । 97
63. यहाँ है । 99
64. माँ की चाह ! 101
65. भाई ! तुम्हें कौन-सा चाहिए ? 103
66. सत्य ही सत्य । 104
67. गाड़ीवाला । 106
68. कच्चे धागे पर नारियाँ । 107
69. जुलाहे की याद । 108
70. कृषक-नारी । 109
71. कारखाने का मज़दूर । 110
72. लोहे के कर्मागार का कर्मचारी । 111
73. सूप-टोकरियाँ बनानेवाला । 112
74. चिड़ियावाला । 114
75. डाकिया । 115
76. बच्चों का कर्तव्य । 116
77. आनन्द । 117
78. प्रेम । 118
79. चन्द्रमा । 119

पृष्ठ

80.	जग का उद्देश्य ।	120
81.	तमिल ।	122
82.	नारी शिक्षा ।	123
83.	बाप, अपनी बेटी को ।	124
84.	स्त्री-पुरूष समान हैं ।	125
85.	श्रमिकों की जाति ।	126
86.	फटने दो, पुराने पंचांग को ।	127
87.	अनिवार्य शिक्षा ।	128
88.	तमिल (भाषी) ।	129
89.	सुन्दरता ।	130
90.	सागर ।	132
91.	पहाड़ ।	136
92.	नदी ।	140
93.	कमल ।	144
94.	सूर्य ।	148
95.	वट-वृक्ष ।	152
96.	कबूतर ।	156
97.	अंधेरा ।	160
98.	छोटा-सा-गाँव ।	164
99.	शहर ।	168
100.	भारत की वंदना ।	172

1. हर कहीं देखो तो शक्ति है रे!

हर कहीं देखो तो शक्ति है रे, भाई!
सात समुंदर का है रे उसका वर्ण! उसी
के पास निवास करते कोटि - अंड़, जो उस
जननी के हस्त - कंदुकों के समान दौड़ लगाते हैं!
एक

अंधियारे में सातों मेघों का
गर्जन! क्या तू ने सुना है? वही तो
है उस महा नारी के हँसने की ध्वनि!
चमकती है उसकी मुस्कुराहट हर कहीं!

पुरूष एक, कविता रस की सीमा
का दर्शन कर पाने की पूर्ण अभिलाषा से -
जब देखता है भुज संचालित नृत्य माता का -
तो पाता है वृद्ध - ज्ञानियों का समस्त - ज्ञान!

इक पल के लिए तुम अगर सोचोगे तो
एक तलवार घुमाने की स्वल्प अवधि में
समस्त संसार को टुकड़े टुकड़े कर दोगे, तब
तुम्हारी वीर भुजाओं में प्रत्यक्ष होगी यह माता!

2. प्रजा की दशा ।

चिड़िया

नारियल के पेड़ पर – चिड़िया
पुन: पुकाराता है – एक
पुन्नै पेड़ पर दौड़ लागाने वाली प्रियतमा
'जा – जा' कहती है।

रंग भरे पंख – अपने
हिलाकर – अपने
शीर्ष को भीतर की ओर सिकुड़ाकर, नर चिड़िया।
बोल उठता है मणि – मुख से:

"क्या री नारी – प्राणों
के चले जाने के पहले – तुम
मेरे पास आ जाओ, या मुझे बुला लिया करो,
देर लगाओ मत,"

यों इसके कहने पर, मादा के
विचार उठे ऊपर – उस
नारियल के पेड़ पर एक होकर, फिर कूद पड़े पुन्नै – पेड़ पर,
पुन: पुकारता है नर चिडिया !

गिलहरी

'कीच' आवाज़ लगाकर – गिलहरी
एक शाखा पर – फिर

शीघ्र उड़ान लगाकर अपने प्रियतम की पूँछ को
अचानक कतरने लगती है ।

हाँ . . . . हाँ . . . . कहकर – नर
आलिंगन करने पहुँचता है पास – तुरंत

चलाये गये बाण के समान धरती की ओर
दौड़ लगाती है मादा गिलहरी !

श्वास भरा नर – उसके
पीठ पर कूद पड़ता है – लुहार

के तप्त लोहे पर जल के बूंद के समान
एक हो जातें हैं आनंद भरे ।

गालियाँ, भय, अपने में
छोटापन, दर्प, कपट,

कलह, शोरगुल, दासता,
लेश मात्र भी नहीं हैं वहाँ !

आकाश और चमेली

विचारों के समान, कितना
विशाल! देखा मैं ने, चक्षु

युगों को मोहित करनेवाले हज़ारों विचारों से
एकत्रित होकर प्रकाश दर्शन देनेवाले आकाश को।

रंगों को, काले
बादलों ने खा लिया। फिर

घोर गर्जन को, बिजली को, उन बादलों से
निर्मित इन्द्र-धनुष को देख,

रंग-बिरंगे परों को हिलाकर, मयूरी
ने नृत्य किया वहाँ!

इन सब को देख शुभ्र-मोतियों के समान चमेलियाँ हँस उठीं!
तब ऊपर से मोतियों को आकाश ने बिखेरा नीचे!

इस भुवि की मोती ने, उस आकाश की मोती
को पहन लिया-उसका बदन सिहर उठा-

आँखों से इसका दर्शन करने करने, विचारों की दुनिया में
आनन्द सागर उठ लहराने लगा।

मनुष्य

बिस्तर सजाकर – कपड़े
बदल कर – कुछ

प्रेम की बतियाँ करने पति को
बुलाती है वह नारी ।

अधिक शोक –
अत्यधिक भय – “ मेरी

स्त्री और मेरे बच्चे, मेरे मर जाने पर
कैसी पीड़ा भोगने लगेंगे ? ”

मन में इस प्रकार सोचकर –
वह बोल उठता है : – “ अरी !

भुखमरी जाति के हैं हम ! बच्चे
अधिक हमें क्यों ?

गंजी छीन ली गयी –
प्रेम छीन लिया गया – भयानक

कपटता से घिरी लघु मनुष्य जाति को
प्राप्त दशा यही है क्या ? ”

3. यह होगा किस दिन ?

" मेरे प्रिय तमिल राज्य में
सब लोगों ने शिक्षा पायी
सकल कलाओं के ज्ञान से,
पराक्रम से, प्रेम से,
उन्नत हिमालय के समान
महान यश पाया ।
आनन्द का अनुभव किया । "– यह प्रशंसा
दूसरों से सुनना है, यह होगा किस दिन ?

" हस्तकौशल के चित्र,
गणित, खगोल – शास्त्र,
दर्शन – शास्त्र, शिल्प – शास्त्र,
विज्ञान, काव्य आदि से
भरपूर तमिल ग्रन्थ
संसार में महान " माने जाकर
पुस्तकालयों में हर कहीं
जोड़े जाना है, यह होगा किस दिन ?

" माँ – सदृश सुन्दर तमिल को, अपने
तमिल – जनों की कविताओं को,
हज़ारों भाषाओं में देखने के लिए
इस भुवि की आसक्ति
मधु की धारा बन बह निकली है । "
अपने कानों में यह खबर गूँज उठना है,
यह होगा किस दिन ? कौन बताएगा अब ?

“ संसार के सकल उद्योगों से युक्त
उपयोगी यंत्रशालाएँ
शोर मचावें, ” – यह कब सुनने को मिलेगा ?
“ कतार बाँधकर तमिल – गण
युद्ध – विद्या सीखने लगे । – यह देख
सारा जग भय कंपित हुआ । ”
यह सुनकर मन को नाच उठना है
हर्ष से, यह होगा किस दिन ?

“ बाढ़ की भाँति तमिल – गण
एक वीर – समूह है – उसकी
आत्मा एक है – पर,
शरीर उसके कई नज़र आते हैं ।
छल से उसके निकट पहुँच पाना खतरा है ।
यह जान जग सारा कंपित हुआ, ” –
यह सुनकर हर्ष मनाना है, यह होगा किस दिन ?
हृदय परवश हो उठे, यह होगा किस दिन ?

“ आँख और रोशनी के समान
सुन्दर पुष्प और सुगंध के समान
नारी और पुरुष परस्पर
इस विशाल तमिल राज्य में,
शीतल समुंदर जैसे प्रेम से,
समान घोषित किये गये ” – यह
कविता कानों में आकर गूँज उठें ।
उसका पान मुझे करना है, यह होगा किस दिन ?

4. शंखनाद ।

हमारा जीवन और हमारी संपदा
कभी न निस्तेज होनेवाली तमिल है । हे शंख ! तुम नाद करो !

हमारे शत्रुजन हो गये अदृश्य कहीं,
यहाँ के तमिल – जनों का एक होना देख !
चंद्रमा के साथ, रजित रवि के साथ,
आकाश के साथ, नक्षत्रों के साथ,
विशाल समुंदर, और इन सब के साथ उत्पन्न तमिल के साथ
जन्म लिया है हमने, पौरुष हमारा
मृगराजजाल समान है, नीच व्यक्तियों को
स्मरण दिलाओ इसका, हे शंख! तुम नाद करो!

सिंहल द्वीप से जुड़ी दक्षिण की प्रजा
है धीरोत्तम वीर, हे शंख तुम नाद करो ।
भड़क उठनेवाली तमिल जाति को कष्ट पहुँचावें तो
निश्चित है संहार, हे शंख ! तुम नाद करो ।

अति क्रूर मृत्यु से क्रीड़ा करनेवाली
भुजाएँ हैं हमारी वीर भुजाएँ !
गंगा के समान, कावेरी के समान, भावों को
जन्म देनेवाला ह्रदय है हमारा ह्रदय !
लाल लहू की खुशबू में वीरता प्रदर्शन करनेवाली
तमिल है हमारी साँस, हे शंख ! तुम नाद करो !

5. वैधव्य की निन्दा ।

चाह के बिना पड़ा है, भाई ! यहाँ
जड़ से पका फनस – अति
क्रूर माना गया है, भाई ! शीतल
द्रवित पूर्ण चंद्रमा !

उजड़ गया है, हाय ! शीतल समीर
उत्तम फूलों का चमन !
छि ! छि ! हेय माना गया, भाई ! परिमल
शीतल फूलों का हार ।

निकट जाने न योग्य ! – इस भाव से दूर रखा है ।
मंगल दायक मीठे फल को बुरा
विष मानकर धकेल दिया है । सुंदर वीणा
के तारों से झंकृत ध्वनि को ।

अनभिषेक माना है, शीर्ष पर
धारण करने योग्य मुकुट को । हमारे
स्पर्श के लिए भी अनुचित माना है सुगंधित मधु
पूर्ण स्वर्णिम भांड़ को ।

आनन्दकामी वर्ग को पूर्ण बनाके
जीवन बितानेवाली नारियों की दशा ! – यहाँ
यों है भाई ! इसपर
किसी को कोई लज्जा है नहीं !

अपने पति की मृत्यु के पश्चात नारी के
सिर पर वैधव्य नामक एक बड़े
दुख – बोझ को उठा रख दिया है, पुनः
सखा की तलाश मत किया करो – कह दिया है ।

स्त्री की मृत्यु के उपरांत दूसरी पत्नी को
खोजनेवाले एक पुरुष के समान नारी भी
पति की मृत्यु के उपरांत अन्य
सखा को खोजने के लिए
कह दिया करेंगे, धरती पर !

प्रेम के बिना शून्य है । संसार
प्रेम के कारण चलता है । नारियों के
प्रेम भरे हृदयों पर रोक लगाना जीवन को
उलट पुलट कर देना ही होगा ।

प्रेम से सिंचित हृदय को बुरे
वैधव्य से मत ढका करो ! एक
सुन्दर पुरुष के सुंदर भुजाओं से मिलाने के लिए
शास्त्रों को मत देखा करो ।

6. बाल - विवाह की क्रूरता ।

हुए सात ही वर्ष, सुन्दर श्याम नयन - सा - पुष्प !
कमल - सा चेहरा एक ! एक
पतली सुन्दर कमर !!
अनास्वादित सुरुचिकर फल उसका मुँह ! -
इन गुणों से संपन्न अबोध बालिका - वह है
चिल्लाने शक्तिहीन कोयल की शिशु !
छलांग मारने असमर्थ हरिण शाबक ! अनाघ्राणित चमेली !

मंगलसूत्र तोड़कर, बाप के घर में
यह बालिका रह जाती है ।
इसके पिता ने भी अपनी पत्नी को खोकर
पुनर्विवाह में एक नारी को है ब्याहा ।
नव वधू और नव वर
रात को चाहकर, जाते हैं खाट पर ।
दिन बिताने करते हैं कंदुक - क्रीड़ा !
नवयौवना विधवा देखती हैं इन्हें !

अकेले अपनी दादी से एक दिन
हुक हुक कर रुदन करती हुई
सात वर्ष की कोमल बालिका है कहती -
" मुझे छोड़कर अपनी छोटी माँ से

पिता का प्यार ! क्या यह उचित है ?
उसे चाहकर, उसके केशों में
लगाते हैं फूले, भगा दिया मुझे ।
पिता और वह जाते हैं अलग कोठी में ।
मैं बाहर कुत्ते की तरह पड़ी क्यों रहूँ ?
मैं हूँ बेटी उनकी ! उनके संमुख जावें तो
' जा तू, कह चढ़ाते भौहें क्यों ?

दादी की गोदी में लिटकर, तड़पती
यों रो पड़ती मृदु वल्लरी !
इसकी दुर्दशा देख रो पड़ी – इसके
भविष्य को सोच दादी भी बहुत ।
रुदन से उत्पन्न आँसुओं की बाढ़ –
इस बालिका के जीवन काल में है महाक्रूर ।

*

7. क्या बच्चे हो दुख भोगने ?

दीप जलाने का समय । आयी पास
नौकरानी बाहर के चौन्तरे पर,
कहा खुशी से – ' जनन हो गया '
सुना मैं ने कानों में शिशु - रुदन का मधुर स्वर !

हृदय – कलश से फूटे हर्ष से
भीग उठी अपनी आत्मा, सिंचित हुआ शरीर ।
पालने के उस बच्चे की आयु हुई तीन,
फिर एक बार हुई गर्भवती मेरी स्त्री !

लड़की तो हुई, अब लड़का एक
होगा कि नहीं – सोचा मैंने । जन्म दिया उसने वैसे ।
आँख की सुन्दरता, चेहरे की सुन्दरता
देख देख गुज़ारने लगा दिन ।
तीसरा एक, फिर एक और, जन्म दिया उसने
गिनती से ये चार, किया परिश्रम मैं ने । इनके लिए
कोमल स्त्री हुई शिथिल, काया पौना भाग ।
खाने को लगता न जी मेरा, बिनु खाये
पाला पोसा बच्चों को पत्नी ने ।

आय के बारे में सोचता हूँ तो रो पड़ता दिल भर ।
कभी न उठनेवाले भाव पुनः पुनः आने लगते ।
राई – भर संपदा है नहीं मेरे पास ! रोग ग्रस्त बनकर

लेट जाऊँ लगातार दस दिन, तो होगा भारी दुख ।
कठिन मेहनत करने मुझे नहीं एतराज ।
पर, देगा कौन इन सब को मज़दूरी ?
क्या मैं लोहा हूँ ? मर जाऊँगा तो अपने
बच्चों की होगी क्या दशा ? क्यों जन्म दिया था
मैंने ? सोचने लगा हर दिन ।

एक दिन, रात के दस बजे, घर में
खा – पीकर, बिस्तर के साथ थकिया भी उठाकर,
गली के चबूतरे पर आ लेटा ! सो भी गया !
बच्चे सब कमरोंवाले घर में सो जाने के बाद, मेरी
प्यारी स्त्री आ पहुँची धीरे धीरे मेरे पास ।
" सो गये हो क्या ? " कहा उसने ! सुमन करों से स्पर्श किया !
" गली में पड़ती है ओस, " कहा उसने ! हाँ, कहा मैंने !
समझ गया मैं उसके दिल को, शब्दों की क्या ज़रूरत ?

पत्नी और मैं, एक घड़ी के लिए
डूबे रहे मौन में ! आया सपना एक :
आग भरी दरिद्रता रूपी महासमुद्र में, हाय !
कोटि कोटि बच्चे अनाथ
दिल की धड़कन ले मृत्यु – देवता के निकट पहुँचने का समय
धन – ध्वजा समेत जहाज़ आया एक ।
अपनी जाति के बच्चे लगे याचना करने,
छि : कहते चल पड़े उस ज़हाज़ के धनिक !

सपना टूटा । उतर आये हम यथार्थ जग में ।
छोड़ी हमने भावना प्रेम सागर में डुबकियाँ लगाने की,

दिन – दिन हम पर जो बीतें, जानें कौन ?
छिः ! छिः !! छिः !!! इसपर भी यहाँ प्रेम की क्या ज़ुरुरत ?
यों निर्णय लिया हमने । फिर भी गये घर के अंदर !
मिलाये आँख से आँख अलग कमरे में,
फिसलकर गिर पड़े वहाँ प्रेम के बाढ़ में !

बीते दश मास ! दिन के समय एक दिन,
कर्जदार आकर सताने का समय,
चिन्त में भयकंपित होने का समय,
बड़ी लड़की के ज्वर की दशा जान ।
आयी बुढ़िया मेरे पास एक, कहा उसने
" देवता की कृपा से शुभ
मुहूर्त में जन्म दिया बच्चे को तेरी स्त्री ने । "
संक्रामिक रोग, दरिद्रता, अमीरों से दुख,
बच्चे ही बच्चे इस निरंतर तूफ़ान में ।

प्रेम के द्वार को बनाये रख, गर्भ के द्वार को बंद करने का
खोज निकालें गे उपाय एक ! इसमें अपराध क्या ?
बच्चे क्या मरने के लिए ? बच्चे क्या तड़पने के लिए ?
संतान की विधा ठीक है । पर, क्या
उसको रोकने की विधा बुरी है ?
प्रेम शिथिल, आँखें शिथिल, हाथ शिथिल,
हो गये विचार भी शिथिल । इस समस्या को
पार करने इन्कार क्यों प्रजा को शिक्षित होने से ?
हे मेरे प्रिय देश ! तुम्हीं करो अनुभव
अपने दिल में, शरीर में और प्राणों में ।

8. संसार की एकता ।

" अपनी स्त्री, अपनी संतान, भोजन, घर,
कमाई – ये सब हैं और मैं हूँ, " यह सोचनेवाला
छोटी एक राई का हृदयवाला है ।
गलीवालों के लिए भी अनुपयुक्त इसका व्यर्थ जीवन ।
" मेरा छोटा – सा गाँव गन्ने के समान है " – यह सोचनेवाला
राई से थोड़ी बड़ी तुअर का हृदयवाला है ।
मुट्ठी भर हृदयवाला वह है जो अपने देश की
आज़ादी के लिए शत्रु – देश को पीड़ा पहुँचाता है ।

शस्त्रों का बहिष्कार करते हैं, शांति की रक्षा करते हैं,
अपने घर, नगर, देश को बचाने
कर – लाघव, वचन – कोलाहल करते हैं, – ऐसे
आम के पिन्दों जैसे हृदयवालों से हम ने पाया है लाभ ।
पवित्र हृदय, स्नेही हृदय, विशाल हृदय उनका है
जो मानते कि " प्राचीन संसार के सभी लोग एक हैं । "
मातृ – हृदय वह है जिसमें है आनन्द ! वहाँ
कलह नहीं, स्वार्थ – भाव के मिटने जाने से ।

9. भेरी !

" दुख दूसरों के लिए, सुखद आनन्द हो
हमारे लिए, " – यह दुष्ट मनो – भाव
प्रेम का करता है नाश ।
धर्म का करता है नाश । धरती पर,
विकास का करता है नाश ।
कलहों का वह है आधार ।
दरिद्रता को ला जुटाता है वह ।
हे भेरी ! तुम हर कहीं नाद किया करो
कि " सुख हो सभी के लिए । "

" हम और हमारे लोगों के जीने के लिए है
यह धरती, " – यह भाव
सारी बुराइयों का बनता है आधार –
प्रकृति – संपदा का करता है नाश !
मधु – पुष्प – वन को, हरित – जल – प्रपात को,
ला बिठाएँगे चित्त में ।
हे भेरी ! तुम जग – भर नाद किया करो
कि " कुशल हो सभी का । "

देश में भले लोगों का
शक्तिशालियों से घृणित किया जाना -
यह भावना है विष - भरी ।
है प्राचीन भूमि पर प्रहार ।
करती है वह पवित्रता का नाश ।
इसको बोल उठनेवाले हृदय में
ज्वालामुखी पर्वत का भूकंप है अनुचित ।
हे भेरी ! तुम दिशाओं में गूँज उठा करो
कि " हैं संपदाएँ सभी के लिए । "

10. हो उन्मूलन !

हर बात के लिए ' भगवान, भगान ' कह
शोर मचानेवाले हे मनुष्य !
भगवान नामक नाम के
सृजन के पूर्व काल में भी

बनाकर सार्वजनिक सारे वस्तुओं को
सुखी रहा सारा संसार ;
' अमीर – गरीब ' नामक इन शब्दों को
बनाया है ' भगवान ' नाम ने ही ।

कपड़ों को ढ़ोनेवाले गधे से लेकर
मेहनत करनेवालों तक की दशा एक,
संचयन के लिए सेना जुटाकर, संपदा
प्राप्त करनेवाले राजाओं की दशा दूसरी ।

अगर सब भगवान की आज्ञा से है, तो
हे कपड़े धोनेवाले सखाओं !
क्या भगवान तुम्हारी उन्नति करेगा ?
या गधा करेगा तुम्हारी उन्नति ?

गाँव में हो या देश में,
संसार में देखें तो हर कहीं,
होगी नीर – भरे – समुंदर के समान
संख्या कठिन परिश्रम करनेवालों की ।

होगी पानी पर तैरनेवाले नाव के समान
संख्या पूर्ण पूँजी का लाभ उठानेवालों की ।

क्या तूफ़ान के सीधे टकराव में
होगा संभव नाव का तैरना ?

व्यवसाय जाननेवाली गरीब जनता,
व्यवसाय करके धनिकों के पास
जमाती है अक्षय पूंजी को ।
उस पूंजी को मूल बनाकर,

बनाते हैं निन्दा भरित सरकार को ।
उससे सेना को भेजकर,
व्यवसाय करनेवाले गरीब जनता के
भोजन में डालते हैं मिट्टी ।

फसल को बोनेवाला मज़दूर
पाता है आने चार ।
बिना शरीर कष्ट के अमीर
करता है राज्य संसार पर ।

'भगवान की आज्ञा है' – कहनेवाले
क्रूर मानव – वर्ग की
'भगवान' नामक परिधि को तोड़ कर,
चढ़ाएँगे ऊपर व्यवसायी वर्ग को ।

11. मिलकर करो व्यवसाय ।

हे सखाओं ! जिन्होंने किया व्यवसाय मिलकर
पाया लाभ अत्यधिक ।
भेद – भावों से कुछ होनेवाला नहीं ।

हे सखाओं ! अपनाये गये व्यवसाय को
कई लोग देश के मिलकर करें, तो
दुख नहीं, मिलेगा सुख अवश्य ।

हे सखाओं ! पूंजी छोटी तो लाभ भी थोड़ा
हज़ारों मिलकर करें व्यवसाय, तो
लाभ ही लाभ !

हे सखाओं ! साठ लोगों की मेहनत से जो बना,
उसका एक व्यक्ति से हड़पा जाना,
बोलो कि साध्य होगा क्या ?

हे सखाओं ! कई लोग बनें एक, तो
बढ़ेगी शक्ति । सोचो ।
अपनाये व्यवसाय में होगा विकास ।

हे सखाओं ! एक हाथ से बजती थाली नहीं ।
कई हाथों के मिलन से
थालियों की आवाज़ बढ़ती अवश्य ।

हे सखाओं ! किसी एक के जाने व्यवसाय को
बनाओ गाँव का व्यवसाय, तो
सब को होगा प्राप्त सच्चा विजय ।

हे सखाओं ! पर, हमारे तमिल राज्य में,
कोई दो आदमी किसी एक व्यवसाय में
जुड़कर रहना – यह चरित्र विरल ही है ।
हे सखाओं ! देश में जहाँ चाहें रहकर जीना –
इसमें कोई बुराई है नहीं,
दर – असल यह नीति है फायदेमंद की ।
हे सखाओं ! पश्चिम – देशों के लोग बने महान ।
उनका लक्ष्य बना मिलकर व्यवसाय करना ।
इसी लक्ष्य ने उन्हें उठाया ऊपर ।
हे सखाओं ! मन एक हैं तो बना सकोगे ।
पाँच पैसों की पूँजी से
पाँच रुपयों का माल ।
हे सखाओं ! हमारी मातृ – भूमि बनी विदेशियों के लिए बाज़ार,
हम हैं यहाँ लाखों व्यक्ति, मन
हो केन्द्रित तो होगा व्यवसाय विशिष्ट ।
हे सखाओं ! बिनु व्यवसाय के शिथिल होना,
दरिद्रता से मरना – यह सब होता है
मिलकर व्यवसाय न करने से ।
हे सखाओं ! मिलकर व्यवसाय न करने से,
कारखाने जो बंद हैं आज
उनकी संख्या है तीन कोटि से बढ़कर ।
हे सखाओं ! सूप – टोकरें बुननेवाले भी करते हैं
मिलकर व्यवसाय । लाभ आता
है उनकी तलाश में । विशिष्टता भी ।

.2. श्रमिकों की प्रार्थना ।

किया जंगल को साफ़, पुन: प्राप्त
किया भूमि को कृषि – योग्य ।
बसाया देशों को, वहाँ
बनायीं सड़कें चतुर्दिशाओं में ।

बनाये मकान, वहाँ
जुटाया आवश्यक पदार्थों को ।
किया परिश्रम, धरती को
लाभान्वित करने किया सतत प्रयत्न ।

फोड़ा पहाड़ों को, संसार को
सजीव रखने समुद्र की गहराई को भरा ।
लहरोंवाले सागर पर, हज़ारों
जहाज़ों को चलने दिया ।

झेली कई यातानाएँ, हम
उठा लाये सोना पाताल जाकर ।
तपाया लोहे को आग में, हम ने
बनाये कई यंत्र उसे पिघलाकर ।

बुना कपड़ों को, महा
नदियों को घेर बोये धान ।
टोकरियों से लेकर, गोपुरों तक के
निर्माण का काम किया हम ने ।

ग्रीष्म से बचने, हमने
प्रदान किया छातों को, अच्छे वाहन बनाये ।
आवश्यक चीज़ों को, हम ने
ला रखा इस जग के मुँह पर ।

जीवन के लिए अनुपयोगी, इस संसार को
ला पहुँचाये इस ऊँची स्थिति पर ।
गहरे समुंदर, जंगल, पहाड़,
उठायीं इनसे चीज़ें शक्तिदायक ।

जूठन, गंदेपन, कचरा,
पत्ते, ढ़ोया हमने सिर पर ।
घिरे बैठे हैं, श्रमिकजन
संसार के हम, विचार करो हमारी दशा पर ।

पहने चीथड़, छिपाया
दोनों हाथों से अपने बदन को ।
मटकी की गंजी पी कर
सब पड़े हैं भूखे ।

हाट के पशु जैसे, हम
रहते सतत बिनु धाम
शोक से शिथिल, कृतज्ञता यही
है क्या हमारी सेवाओं की ?

धर्म के नेतागण ! इस
धरती को घेरे बैठे हुए भाइयों !
कुतर्क पैदा कर, महा
लूट करनेवाले करोड़पतियों !

चूस चूस कर, संपदा
निचोड़कर तुमने हमें पीड़ित किया !
आर्थिक विकास, और उपजाऊ –
भूमि को कर लिया अपने वश ।

हमारा कहना मानो, काफ़ी अधिक
है संख्या इन श्रमिकजनों की ।
अत : यह न समझो कि
हम हैं निरर्थक लोग ।

अभी तुरंत, सार्वजनिक
कल्याण उगाने अपना धन – सर्वस्व को
कर दो हमारे वश, हमारे
बदन से खून उबलने के पहले ।

13. मृत का पुनर्जीवन ।

नदी के किनारे, पेड़ पत्तों से भरे एक वन में
झूल रही है एक सुन्दर यौवना ।
चबूतरे पर बैठ, कीचड़ से गुड़िया
बनाकर खेल रहा है एक लड़का ।
मिट्टी के चिराग़ के प्रकाश में, चटाई पर
नव शिशु और उसकी माँ आपस में प्यार करने लगे हैं ।
ऋण की बाधा से रोग – ग्रस्त बाप,
हाय ! कहकर गिर पड़ा नीचे बेहोश ।

आस पास के सभी लोग दौड़ आ पहुँचे वहाँ ।
प्रिय पत्नी अपने नायक के मुख से मुख लगाकर
मीन – सम – नयनों से आँसू बहाकर तड़प उठी ।
नीचे पड़े कमज़ोर बदनवाले रोगी के
गले की आवाज़ हो गयी धीमी ; निस्तेज़
हो गयी उसकी आँखों की रोशनी, साँस फूल गया ।
सिर चकराने लगा । वह रोने लगा आँसू बहा बहाकर ।
मन है, मुँह नहीं ! पाप ! करेगा भी क्या वह ?

" बोलोगे कि नहीं अपना मुँह खोलकर ? देखोगे कि नहीं
अपने बच्चों को आँख उठाकर ?
हे मेरे प्रकाश – हीन मणि – प्रकाश ! " – बोली पत्नी ।
" बताओ क्या है तुम्हारी चाह ? " –

बोले सखा सब। यह सुनकर, रोगी ने
दिल को, आँखों को अपने वश में लाकर,
न बोलने की स्थिति में, हीन स्वर से,
" बीबी - बच्चे ! बीबी - बच्चे !! " - कहा। मूर्छित हुआ।

सामने जो लोग थे सुना इसको ; बहुत दया करने लगे।
मरनेवाले को जगाने, कहा बहुत कुछ उन्होंने।
' आज ही तुम्हारा कर्ज़ हम चुका देंगे ' - कहा।
उसकी दशा में कोई परिवर्तन नहीं। एक दूसरे ने आकर
कहा, " ज्ञान जागा है हमारे सरकार को,
' धरती की सभी वस्तुएँ प्रजा के लिए सार्वजनिक ' -
यों घोषित कर दिया है उसने। अब बीबी - बच्चों के बारे में
भय नहीं ! चिन्ता नहीं ! सच भाई ! सच सच भाई !! "

यों कहा उसने आश्वासन - भरी भाषा में, सोचा कि
मरनेवाला मनुष्य मरते समय निश्चिन्त हो मरें।
ये भली बातें उसके कानों में पड़ीं।
उसका बलहीन बदन चीते के बदन - सा हो गया !
निकलनेवाले प्राण नहीं निकले।
मरनेवाला तुरंत उठ कर बैठ गया !
" डरता नहीं हूँ आज मैं मरने के लिए। " कहा उसने।
" मिश्री के समान है अब मरना मेरे लिए ! " कहा उसने !

14. मानवता वाद की शक्ति ।

मानवता वाद से, कई लोगों का
जग पर शासन करना देखा हम ने ।
मानवता वाद पर विश्वास करो । भाई !
धरती पर जिओ । उसकी शक्ति पर विश्वास करो ।
' मानवता वाद ' एक तलवार है, उसे
अपने वश रखनेवाली तेरी भुजाएँ दोनों,
जमा सकेंगी अधिकार गगन पर, इस पर
किया गया विश्वास, है जीवन का विकास ।

(मानवता वाद ....)

मानव ने जहाँ तक जिया है, जो कुछ
उस ने किया है जग में उसके आधार पर
कहो – क्या तुमने सुना है किसी शक्ति का नाम
जो बढ़कर है मानवता वाद से ?
मानवता वाद है क्या कोई पक्षी, या किसी
चकले के संबोधन के लिए सृजित शब्द ?
जंगल में भी तो जिया था, फिर
सागर को अपने वश किया था मानव ने ।

मानवता वाद नहीं चाहती प्रशंसा, अगर ऐसा हों
तो मानवता वाद स्वयं मानव को धिक्कारती है ।
मानवता वाद नामक एक पहाड़, उसमें स्थित
समता नामक शिखर पर खड़े होकर,
सुन्दर ढंग से मानव के लिए प्राप्त
निर्मल ज्ञान नामक आँखों से
देखो दिग्दिशाओं में हर कहीं, पाओगे कि
मानवता वाद है जीवन – सर्वस्व !

15. बढ़ आगे !

जाति, धर्म भेद, रूढ़िगत अंधविश्वास –
        इनके आधार पर स्थित झगड़ालू – जग को
फूकने पर उड़ जानेवाले धूल जैसे भगा देंगे, फिर
        करेंगे नाश उसका – बसाएँगी नया संसार एक !
भेदों को मिटाकर, उस ज्ञानमयी संसार का
        नाम रखेंगे, " आत्मगौरव – युक्त – संसार । "
देख इधर ! हे समाज ! मेरे कहे रास्ते पर चल ।
        तू बढ़ आगे ! तू बढ़ आगे !! तू बढ़ आगे !!! आगे बढ़ ।

जीनेवालों को जीने न देनेवाला
        अत्याचारी कौन है वह ? धर्म ही तो है वह ?
" हत्या कर दी महाज्ञान की, जला दिया हमने
        बृहत्कर्मों को " – कहेंगे हम ।
अतीत के बुद्ध, रामानुज, मुहम्मद,
        जीसस – ये नाम लेकर
झगड़े करते । किसी ने जाना नहीं अज्ञान को !
        हे समाज ! आगे बढ़ तू ! मेरे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ।

16. उलगप्पन का गीत ।

हेतुवाद की सभा में, जग रूपी पुराने
पूँजीपति को ला खड़ाकर, किया प्रश्न मैंने –
" कहो, तुम्हारे पास अधिक है भूमि,
उर्वर और सूखी, जिसको दी थी
जनता ने तुम्हें अमानत के रूप में, सब के
सुख के लिए ! " " हाँ हाँ ! " जवाब दिया उलगप्पन ने ।
" उसके लिए कोई रसीद है या सिर्फ़ ज़बान ? " पूछा मैंने,
उत्तर मिला – " सिर्फ़ ज़बान ! "

" अमानतदार ने जो सीमाएँ बतायी थीं
क्या हैं वे उसी भाँति ? " पूछा मैंने ।
हाथ और मुँह की चतुराई – भरे लोग
मूर्खता से जनता की सारी ज़मीन को
हड़पकर, अपने वश कर लेने के कारण
बढ़ गयी है संख्या मज़दूरों की ।
गरीब हुए छिद्र पत्तों और फूटी मटकियों के समान ।
अमीर बने नीर – भरे पूर्ण – कुंभ के समान ।

होकर अधिक, परिवर्तित होकर बहु राशि में,
धन क्रम – क्रमेण कुछ लोगों के पास
हो गया केन्द्रित, वेश्या के नृत्य के समान ।
तड़प रही है गरीब जनता कीड़ों के समान ।

हालत यह है आज की।" – कहा उलगप्पन ने ।

"हालत यह होने से, हे उलगप्पा ! तुम अब
लगाओ नया हिसाब, समिष्टि से सर्व वस्तुओं को
अमानत बना दो सभी की ।

करो यों कि यहाँ न हो कोई गरीब या अमीर नाम से ।"
कहा मैं ने । उठ खड़ा उलगप्पन । कहा –
"गहरी है, सच है तुम्हारी बात ।
विरोध क्यों हो उसका ? नहीं तो ।
गहरा है तुम्हारा विचार, सच है,
सुन्दर भी है, अच्छा है, दूर होंगे
इससे ऊँच–नीच भेद भाव ।"
वह लगा नाच ने । कहा मैं ने हँसकर –

"उलगप्पा ! तुम नाच रहे हो । सोचो तो सही !
इसे मानेंगे नहीं हल्ला मचाने वाले लोग !
खोज निकालो कोई उपाय !" सोचा उसने ।
हो उठा अधीर मन में ।
"कृशगात्र गरीब जनता
लात मारनेवाली हो जावें, तो एक पल में
ऊँच – नीच का सारा भेद मिटकर
सब एक – समान हो जाएँगे । यह जानो तुम ।"

17. ग्रीष्म की कटुता और वर्षा का आगमन ।

ग्रीष्म की भीषणता से बचने की भावना से
मैं चल पड़ा समुन्दर के किनारे, समुन्दर
उबलते पानी से भरा था, समुन्दर की हवा
बाष्प बनकर आग के समान बहने लगी,
आकाश की गरमी से ओझल होनेवाला सूरज लाल हो उठा ।

उदित शुभ्र चंद्रमा, तेल में तले गये
पापड़ के समान फूलने लगा ।
गरमी से जनित चेचक के समान
तारे आकाश में निकल पड़े ।
घास में लपेटी ककड़ी के समान
आतप्त शरीर पसीने से पीड़ित हुआ ।

क्या अकेला मैं ने ही इस दुख को भोगा है ?
कदापि नहीं, तमाम जनता
दुखी होकर, रुदन करती हुई
ग्रीष्म की कटुता से मुरझाने लगी ।
विप्लव के तनाव के पश्चात
सामूहिक अधिकारों के उदय के समान प्रवेश करने लगी वर्षा ।

18. स्वेद सागर

प्रात : काल :

मैं निकल पड़ा बाहर, पूरब के उजाले के पहले ;
होने लगा प्रकाश अंधियारा आकाश ; शीतलता, सन्नाटा –
इनके बीच, बना मेरा ह्रदय मचलता – हरिन – शाबक ;
दौड़ने लगा उत्साह मुझे उड़ाकर !

प्रकृति :

पहाड़ होगा, उस पहाड़ के पास
तालाब एक, सुन्दर शीतल बाग़
होगा सुन्दर ; वहीं
हैं मेरे अपने खेत !

दिन :

सागर में उदित सूर्य की सुदीर्घ किरणें
फैल गयी आसमान भर ! उड़ चला महा अंधकार !
धरती पर के चित्र प्रकाश में लगे चमकने ।

खेत :

वैभवपूर्ण नवपौधों की हरियाली,
मरकतमणिजाल वर्ण से भर गयी ।
मरकत मणियों पर व्याप्त तुषार कण,
आँखों को चकाचौन्ध करनेवाला हीरों का भंड़ार ।
मैं अपने विशाल खेत को देख रहा था,
सिवाय प्रसन्नता के पाया और न कुछ !

परिश्रम :

खेत से फालतू घास उखाड़ फेंकने – अपने
खेत के कई किसान आये ।
किया मेरा नमस्कार, उतर पड़े खेत में ।
धनु के समान झुके बदन ! भुजाएँ उनकी
हिल पड़ीं अति वेग से – निकाल दिया घास ।
चेहरे पर की आँखें गिर पड़ीं खेत में !

मध्याहन :

उषा को जलाकर अपनी आग से
सूरज जा पहुँचा शिखर पर ;
दग्ध धूप कृषकों की त्वचा को लगी छिलने,
मैं जा पहुँचा नव पुष्प वाटिका में !

धूप :

स्वच्छ शीतल जल से भरा था तालाब,
मैं खड़ा रहा छाया भरे किनारे पर,
बदन भर गया मेरा ताप व स्वेद जल से,
कृश किया मुझे इस ज़हरीले धूप ने !
वह अंबर से अवनि पर कूद कर,
मधु पुष्प वाटिका की हरियाली को सुखाकर,
मेरे ह्रदय और प्राणों को चीरने लगा ।
तालाब में कूदकर मैं नहाने लगा ।
भरपूर जल भी जलाने लगा मुझे आग के समान !

परिश्रम का दुख :

अपने ताप से सबेरे को नाश कर,
पार कर बाग़ - बगीचों को जो धूप आया जलाने,
विशाल जल संपन्न सरोवर को भी कर दिया गरम -
यों सोच रहा था मैं ! सोचते समय, मेरी आँखों के सामने
स्वेद और थकान से युक्त कृषक
आ खड़े हो गये । नमस्कार करने लगे ।
हाय रे मन ! इन मनुष्यों ने
सहा किस प्रकार असहनीय ताप को ?

पसीने के सागर का दर्शन :

तुच्छ घास निकालकर छोटा - सा लाभ पहुँचाने आये हैं ।
इन लोगों के बदन टूटने से निकल पड़नेवाले
सीने के एक एक बूंद में मैं ने पाया इस सत्य को ।
श्रमिकों का है यह जग !

*

19. तुम ही कहो ।

हे रंग – बिरंगे वन ! तुम्हें भली भाँति
साफ़ करने इस जग में, पहले
कितने सखाओं ने बहाया था खून
तुम्हारी जड़ों में !

निरंतर जोतने के कारण, अधिक
धान उगानेवाली हे अच्छी भूमि !
तुम पर कितने मनुष्यों ने अपने
माथे के पसीने को बहाया है, हमें पता नहीं ।

हे विकसित कमलवाले सरोवर ! तुम्हें
बनाने के उस काल में, हमारे कितने
पवित्र भाई गढ़े गये और प्रण खोये
इस जग में ? हम क्या कहें ?

हे सुदीर्घ सड़कों ! तुम्हें इस विशाल
संसार में जिन्होंने निर्माण किया, उन्होंने
कछुए की भाँति पंचेन्द्रियों को सिकुड़ाकर
श्रम किया सूर्यास्त तक !

हे शोर मचानेवाले यंत्र गण ! क्या कहूँ मैं
तुम्हारी शुरुआत और समाप्ति के संबंध में ?
तुम जनित हुए श्रमिकगण के श्रम से ।
क्या यह सत्य नहीं ?

हे कीर्तियुक्त वस्तुओं से भरी धरती ! तुम्हारे
तले स्थित बुनियाद, हमारे
नेक श्रमिकवर्ग के मेहनती बदन
की मांस – पेशियों से बना था ।

हैं जल, आग, भूमि, आकाश और हवा
से निर्मित प्रकृति ! जग की जो चीज़ें
तुमसे जुड़ी हैं, उन्हें दिया किसने ?
मज़दूरों के लंबे हाथों ने ।

हे धरती ! मज़दूरों की मेहनती के
साक्षी तुम्हीं हो न ? ‘ भूख मिटाना है
तो जाएँगे हमारे प्राण ’ – कहनेवाले
धनिक वर्ग की नीति अच्छी है क्या ?

सब कुछ खाने देकर चूहों को,
चुप रहेंगे क्या शेर ?
सियारों को खाने देकर,
क्या चीते सोया करेंगे झाड़ियों में ?

निर्भय होकर टूट पड़ो । अब
विचार नहीं याचना करने का, जिसकी
अपनी ताक़त है, वही बनेगा अधिकारी
सुखद जीवन का । यह कथन दूर नहीं है सत्य से ।

20. नयी दुनिया बसाएँगे !

नयी दुनिया एक बसाएँगे, बुरी
झगडालु दुनिया का करेंगे उन्मूलन !

समिष्टि लक्ष्य को अष्ट दिशाओं में पहुँचाना है,
पवित्र भावना से उसे हमारी जान कहना है ।

(नयी.......)

पूरे ह्रदय को प्रेम की सरिता से सींचना है,
'मेरा यह' कहने की क्रूरता को दूर करना है ।

(नयी.......)

भावना की आग में शरीर की आलसता को जलाना है ;
'यह वस्तु अलग' कहनेवाले उन मनुष्यों को देख हँसना है ।

(नयी.......)

प्रकृति संपदा हमें लाभ पहुँचाने से मना करती है तो रहेंगे भूखे,
प्रदान करती है तो खाएँगे सब मिलकर ।

(नयी ......)

21. भाईचारा ।

निश्चय ! निश्चय ! निशचय है !

समूह एक है – इसको न माननेवालों का अंत !

(निश्चय ....)

एक देश के लोग हैं बन्धुजन ।

(निश्चय ....)

जन्म के आधार पर ऊँच – नीच का मानना मूर्खता है, इस

भेद को मिटाना जीवितों का कर्तव्य है, हममें

जो कमियाँ हैं उन्हें न कहना है तभी वैरता दूर होती है तुम

अपनी गुफ़ा से बाहर निकलो । हे शेर !

(निश्चय ....)

पाना है समृद्धि हमें जीवन में, हममें

कपटता दर्शाकर कुछ लोगों को नीच बताना बुराई है, धरती पर

जीनेवाले सब लोग सम – धर्म की भावना से जिएँगे, और

जो मिट जाते हैं वे भेद – भाव से मिट जाते हैं ।

(निश्चय.........)

एक माँ के बच्चे हैं देश के सब लोग – इसको
न जाननेवाले दूसरों के हाथ पले जानेवाले कुत्ते हैं अधिक
प्रेम से हम सब एक बनकर खड़ेंगे, तो
पूर्ण जीवन पायेंगे, वज्र – पर्वत के समान ।

(निश्चय .....)

जब सभी लोग अपना अपना लाभ खोजते हैं, हममें
किसी एक को दोषी ठहराना बुराई है । हमारे
चित्त से अंधकार को भगानेवाली बात सुनो ।
जन्म से कोई न ऊँचा , न नीचा है ।

(निश्चय .....)

22. तलवार उठा रे !

कुछ बलशाली लोग कमज़ोर लोगों को
सताते ही रहना है क्या ?
' महाराजाओं का संसार में राज्य करना
शाश्वत है ' – क्यों यह विचार ?
धरती पर राज्य करने तेरी माँ, कई
यातनाएँ उठा रही है ।
व्यर्थ है अब विलंब करना,
तुरंत जाग उठ !

कलाओं का कर विकास ! चाह व्यवसाय को !
कविता कर !
उदधि – सम सेना को जमा !
युद्ध का सामना करने कठोर आयुध जुटा !
खेत जोत ! नव – धान्यों की
पूरी आमदनी पाओगे !
अर्थ - शास्त्र के ग्रन्थों की उत्पत्ति कर !
जीव – शास्त्र के ग्रन्थों के बारे में बोल ।
सच्चे ग्रन्थों को अधिक लिखा कर ।

लहरों के महासमुद्र, भूमि और आकाश में हो
तेरे सुन्दर महल तथा रथ,
उनपर चढ़ने की विधा में
तू हो विजयी ।

हत्यारे तलवार को उठा रे! अति
दुष्ट लोगों के कार्यों का खण्ड़न करने ।
गुफ़ा में जीनेवाले हे एकमात्र चीते! महा
गुणों से आभूषित होना है तुझे !

किया कर महोत्तम धर्म!
स्थापना कर सम – नीति की!
'समता ही प्रजातंत्र का अर्थ है,'
कहकर ढंका बजा !
'नहीं, भोजन नहीं, आधार
नहीं' – ये विवशताएँ
अब नहीं, अत :,
ढंका बजा! ढंका बजा !!

✡

23. आज़ादी ।

खाने को देंगे मीठे फल,
देंगे तुझे मीठी दाल,
करेंगे तारीफ़ तेरी – सोना ! चाँदी ! – कहकर ।

फिर भी, हे तोते ! देखो वहाँ !
तुम्हारी साथ जन्मी छोटी बुआ ने
गगन मार्ग में जा घूमकर,
नारियल के पत्तों के सुनहरे झूलन में झूलकर,
पौधों में रहकर, रास्ते में चरकर,
आकाश और धरती को अपने वश कर लिया है ।

क्या तेरे लिए बढ़ई का बनाया घोंसला ही शाश्वत है ?
बुआ, बुआ, पुकारा तू ने ।
बुआ आकर तुझे देने, हे तोते !
क्या आज़ादी है अदरक या काली मिर्च ?

24. संगीतात्मक - तमिल ।

मेज पर का दीप जलाकर,
मैं बैठा कुरसी में।

प्यारी तमिल पढ़ी मैं ने,
मेरी प्रिय माँ आयी पास ।

मूँछोंवाले तमिल के राजा
अपनी वैरता को जीतने के इतिहास को,

ज़ोर ज़ोर चिल्लाकर पढ़ा मैं ने ।
माँ की प्रसन्नता का क्या कहूँ मैं ?

समृद्ध तमिल राज्य
की नारियों के

किसी भी आगंतुक का
अतिथि - सत्कार करने के आचार -

इनके बारे में
मुँह खोलकर बोलने पर,

उस तमिल माता के
चेहरे पर जो वात्सल्य उभर आया

उसका वर्णन मैं करूँ किस प्रकार ?
सुनने के बाद, और भी बोलने को कहा उसने ।

मेरे निकट पास पहुँचकर – ' हे मेरे बच्चे ! '
निवेदन किया उसने, ' नेक शहद को
टपकाने के समान, मुँह खोलकर,
मुझे सुनाओ एक कविता । '
गांठवाले गन्ने के समान, संगीतात्मक
तमिल को कानों से सुनकर
अष्ट – सिद्धियों को पाया उसने,
मुझे ढोकर पाया जिसने !

25. सुन्दर ढंग से ।

सुन्दर सुन्दर लिखो
मोती के समान ।
लिखने की लिखावट तेरी
प्रकृति को दर्शाती है ।

साफ़ साफ़ ज्ञान –
विचार के चित्र को
आसान ढंग़ से
लिखकर बताओ ।

पुस्तक में प्राप्त गीत को
संगीत के साथ पढ़ो, समझो ।
प्रकट गद्य शैली को
मिलाकर पढ़ो, समझो ।

समृद्ध तमिल की सेवा
है समृद्ध जीवन ।
सत्य को आगे बढ़ना है,
वही प्रिय है त्रितमिल को ।

26. अमर्त्य किसान

धूप में किसान
पसीना टपकाकर जोतने की
खेत से दूर स्थित पेड़ की
छाया भी जलने के कारण, मैं
ठंड़ी झोंपड़ी
में जाकर, फिर, शाम को
उस खेत के पास आया ।
किसान
जीता हुआ अभी
जोत रहा है !

27. चमन का महादान

फूल देते खुशबू ।

भ्रमर देते संगीत ।

नाले देते जल जल नाद भरा जल ।

ग्रीष्म देता अधिक गरमी में शीतलता ।

नारियल देता मीठा पानी ।

शहदी केला देता फल ।

पुन्नै[1] देता चुंबन ।

धूप लिख देता अपना प्रस्थान ।

चमेली देती मुस्कुराहट ।

लाल कनेरे देते क्रोध ।

तोता देता तमिल अपनी बातों में ।

मयूर देता सुन्दरता अपने परों से ।

बन्दर देता दूध ।

बन्दर का बच्चा देता मुँह ।

फूलों का वन देता टपकता शहद ।

मक्खियों का झुंड़ देता सुन्दर तमिल ।

---

1. पेड़ का नाम

28. चूहे ।

गिनती करें तो होंगे सौ
हमारे घर के चूहे !– वे
दिन रात पदार्थों को
चुराने में हैं चीते !

आँखों के समान दौड़कर, एक
दरवाज़े के बीच से होगा ग़ायब ! – वहाँ
गरम किये गये घी में से
आधे से अधिक होगा गुम !

खल खाकर चूहा
घड़ा भी फोड़ देगा ! – नेक
पेटी को छेदकर चूहा
रेशम को भी काट खाएगा ।

तेल पिएगा एक,
इमली खाएगा एक ! – वहाँ
दो चूहे फलों के गुच्छे को
खींचेंगे – आगे पीछे !

परमेश्वर का डमरू नाद
सुनायी देगा कमरे में ! – वहाँ
पाँच चूहे धान की खत्ती के
ढक्कन को उठाएँगे ऊपर !

ताड़ – पत्र की पोथी की
मरम्मत करेगा एक ! नयी
कविताओं को भी शुद्ध करेगा
ग्रन्थ खाकर !

29. महात्मा गाँधी और खादी ।

' विदेशी कपड़ा मत छुएँगे ' – इस समाचार
को सुना रे तू संसार भर! हमारे,
साठ कोटि लंबे हाथ चरखे
घुमाएँगे ! घुमाएँगे ! घुमाएँगे !

' इसपर चलेगा नहीं विदेशियों का षड़यंत्र ' –
कहकर पीटो अपनी भुजा । हे निम्नजातिवाले !
तू हाथी पर सवार होकर ढोल
बजा! बजा! बजा!

' दुख देनेवाले को बाधा पहुँचाये बिना
चरखा घुमाओ तुम ' – कहनेवाले
हमारे महात्मा गाँधी के धर्म कार्य
जीतेंगे! जीतेंगे! जीतेंगे!

गन्ने हैं हमारे महात्मा गाँधी के वचन ।
बोल रहा हूँ उन्हें सुन – ' तुम
पहनो खादी! तुम्हारे दुश्मनों की जड़ें वहाँ
चूर ! चूर ! चूर !

30. बल - संपन्न तमिलनाडु ।

बल संपन्न तमिलनाडु है हमारा राज्य,
स्तुति करेंगे इसका प्यार से ।

(बलसंपन्न........)

सुदृढ़ भुजा संपन्न वीर और
चंद्रमुखियों का निवास स्थान ।

(बलसंपन्न........)

सुमधुर गाती चलतीं
वैगै, कावेरी और पेण्णै !
शीतल समीर फूलों का चमन
अमर्त्य आनन्द भरा राज्य !

(बलसंपन्न........)

चंदन सुगंधित पोदिगै पर्वत,
आभायुक्त खगों का गायन,
टपकता मधु - सा आनन्द भरा,
धान के खेतों से भरा राज्य !

(बलसंपन्न........)

हर्षदायी तमिल कविता,
जीवन की वह आत्मा ।
जग का आनन्ददायी पुरातन राज्य,
जिसने बताया जीवन की उपयोगिता को !

(बलसंपन्न........)

31. चंदा ! क्या तुम नहीं जानते ?

चंदा ! बोलो ! क्या तुम नहीं जानते ?
हमने धरती पर सुखमय जीवन जिया था ।

(चंदा..........)

कृषि में हो या व्यवसाय में हो,
हम जिये थे बिना किसी कमी के ।

(चंदा..........)

कला में हो या उन्नत दशा में हो, या
कविता में हो, हमने पतन न पाया था ।

(चंदा..........)

वीरता में हो या यश में हो,
राई भर भी हमारे समान कोई था नहीं ।

(चंदा..........)

जग के वाणिज्य में,
थोड़ा सा पतन भी हमारा न हुआ ।

(चंदा..........)

धर्म में, युद्ध में या सुन्दर कलाओं में,
सब में बने थे हम विशिष्ट ।

(चंदा..........)

32. बाड़ी बननेवाला ।

गाता हुआ एक आदमी, देख
गली में बाड़ी बन रहा है ।
बाड़ी बन रहा है ।
देश की खूबी के लिए, हर दिन
अपना बदन तोड़ रहा है । उसने
दाढ़ी बढ़ायी नही, जग को ठगाने
जटा बढ़ायी नही।

सतत खोजे जानेवाले
परमेश्वर का भक्त, अपने को बताकर
परदा डाला नहीं ;
काली कोठियों में एकत्रित नारियों से
प्यार की बातें नहीं की, उनसे
याचना नहीं की ।
परिश्रम किया री !
देश को लाभ पहुँचाया री !

(गाता हुआ एक..........)

पर्वत सम भुजाएँ ; उनपर, उसका मुख है
उदित सूर्य के समान !
सुन्दर पुरुष री वह, मेरी
आँखों का नायक है वह ।
देर न करूँगी अब, मुझको
उससे प्यार है ।
समय है सुसमय, अभी मेरे
घर आने को कह री उससे !

33. परिवार नियोजन अस्पताल में एक नारी की प्रार्थना ।

जो बच्चे हैं, वे काफ़ी हैं मेरे लिए, हे माँ! – मेरे
गर्भ – द्वार को बन्द कर दो, हे माँ! हे माँ!!

(जो बच्चे हैं..........)

अधिक कमाई मुझे है नहीं, अब
बच्चे को जन्म देने की शक्ति मेरे शरीर में नहीं ।
कमाई में बचाने कुछ नहीं, अमानत में
कुछ लेने के लिए नाक का बेसर भी नहीं ।

(जो बच्चे हैं..........)

" जनसंख्या बढ़ने से पड़ेगा अकाल, यहाँ
आनेवाले अकाल से चरित्रहीनता ही शेष," –
मनीषियों ने यों कहा है । (मेरा) जी
सहन कर सकेगा क्या? दया करो थोड़ी ।

(जो बच्चे हैं..........)

मातृ – भाषा पर प्रेम नहीं देश में,
स्वार्थ – परक हैं लोग अपने लक्ष्य में,
पवित्रता नहीं है हृदय रूपी घर में,
इस लक्षण में आबादी की बढ़ौती क्यों?

(जो बच्चे हैं..........)

सब उदित लोगों की भलाई, यहाँ
उन अनुदित लोगों की देन है ।
' अजन्मम् आनन्दम् ' कहा था महा
पवित्र बुद्ध भगवान ने भी ।

(जो बच्चे हैं..........)

34. धर्म काहे को?

नाश हो सब धर्मों का! कहा रामलिंग स्वामी ने
निःशेष अंत हो धर्म के प्रति प्रेम का। कहा
रामलिंग स्वामी ने!

नाश हो ....

क्यों नहीं यह ज्ञान? उन्हें
माननेवाले भक्तों को?

नाश हो ....

अगर सभी का ईश्वर एक है,
इतने धर्म काहे को जग में?
अहर्निश धर्म की बात करनेवाला,
चलता है क्या उसी के मुताबिक?
जिनके पास है उत्कृष्ट प्रेम और सत्य,
उन्हें ब्रहमानन्द की प्राप्ति है अवश्य।

नाश हो ....

35. बुद्धिहीन ।

बुद्धिहीन अगर धनी हो तो
अणुबम बनाएगा, अच्छा
धर्मज्ञानी धनी हो तो
परोपकार करेगा ।

मस्तिष्कहीन अगर धनी हो तो
क्रूर सेना जमाएगा, अच्छा
भलामानुस धनी हो तो
स्थित दुख दूर करेगा ।

पाषाण – ह्दयी अगर धनी हो तो
झगड़े – फ़िसादे कराएगा, अति
नेक ह्दयी धनी हो तो
जग क़ी रक्षा करेगा ।

धर्महीन अगर धनी हो तो
जाति – पाँति को चाहेगा, अच्छे
सोने का दिलवाला धनी हो तो
नीति का मान करेगा ।

36. यह शताब्दी ।

जो विकास किसी
शताब्दी में न हुआ ;
इस शताब्दी में
हो पाया उत्थान ।

काल के वेग को
पार करनेवाले विमान,
संसार की विशालता को
घटा दिया है देख तू ।

दूर – भाषा का संपर्क
सखाओं से दोस्ती !
लहर समेत सागर और पहाड़
को जाना दूरदर्शन ने ।

आकाश – वाणी से
जग की भाषाएँ,
मधुर श्रवण बनीं ।
समस्त दिशाओं में लाभ ।

आकाश में आयुध !

ग्रह से ग्रह को

छलांग मारते हर कहीं

हम पहुँचेंगे कल ।

एकता, शांति

बढ़ने हे भाई !

पूर्ण रूप से काट फेंको

भेद नामक काँटे के तार को ।

37. वाणिज्य, सरकार के अधीन हो ।

ख़ास व्यक्तियों के हाथ अगर वाणिज्य हो, तो
क्या चीज़ें न्याय भाव पर मिलेंगी ?

(ख़ास........)

इस पर भी अगर सरकार आँख मूँद बैठें तो
गरीब जनता को मिट्टी तले गाढ़ना ही होगा ।

(ख़ास........)

तिल से लेकर सरकार को खरीदना चाहिए,
हर जगह दूकानें खोलकर बेचना चाहिए ।
आँखों से माल ओझल करनेवाले
दुष्टों के विरोध में ज़ोर से थूका करो ।

(ख़ास........)

एक सेर इमली को खरीदा था एक चाँदी का सिक्का देकर,
दूसरे दिन उसी इमली का दाम बताया गया तीन चाँदी के सिक्के !
दया नहीं है लेश मात्र भी !
गरीबों का दम घोंटनेवाली यह दुर्दशा !

(ख़ास........)

डिब्बा – भर हींग होगा उसके पास
' नहीं ' कहेगा नवजात शिशु की माँ के लिए भी,
एक दिन के उपरांत कहेगा – भाव बढ़ गया है ।
हो सर्वनाश निजी व्यापार का ।

(ख़ास........)

38. मत चुरा !

अंधे के पास भी कुछ मत चुरा
तेरा ही दिल काट खायेगा तुझे ।

(अंधे............)

चोर एक बार बच जाने पर भी
चुरा चूरा चुराकर कई बार,
बड़ा चोर बनकर, कई वर्षों का
दंड़ पायेगा ! हँस पड़ेगा जग उस पर !

(अंधे............)

भूख में भी सहन सुन्दर है,
चुराना बुरा है चावल का एक दाना भी ।
गंजी चूरने के लिए भी दूसरों का नमक न हो ।
कपट – स्नेही से दूर रह तू ।

(अंधे............)

तू पढ़ ! तू कर परिश्रम ! तू जी अच्छी तरह !
दूसरों की मदद कर ! हे सद्गुणसंपन्न !
तू पढ़ ! सुन्दर तमिल ग्रन्थों को सब,
विजयी होना है तुझे तमिल – वैर – भाव पर !

39. आज़ादी की चाह जीव के लिए सहज ।

मंज़िलोंवाले मकान के कुत्ते ने
घर के चौखट की सीढ़ियों पर जाकर
चिल्लाते हुए, एक क्षण रुक्कर,
काले कुत्ते को ' आओ ' कहकर

ज़ोर ज़ोर से पुकारा ।
गली का कुत्ता जा पहुँचा ।
" मंजिलोंवाले मकान में रहते हो,
समय पर क्या खाते हो ? "

यों प्रश्न किया काले ने सफ़ेद से
अपनी साँस फुलाकर ।
" यहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं,
बोलता हूँ, सुन मेरी बात ।

हर दिन दूध का भोजन,
आप्पम, रोटी, नवनीत ।
सुअर की भाँति मोटा होता हूँ,
सोता हूँ रेशम के बिस्तर पर ।

तुम भी आकर रहो मेरे संग ।
कहा सफ़ेद ने सप्रेम ।
कानों से सुनकर पूछा काले ने
" गले में फोड़ा सा है, क्यों ?

बोलो, कारण क्या है ? " उत्तर दिया उसने
अपनी जीभ को बाहर फैलाकर,
" कुछ भी किये बिना,
मेरा गला दुखे बिना,

कान के पास रस्सी
बाँधने से यह फोड़ा हुआ है । "
सुनकर काले ने कहा
" तुम क्यों हो गुलाम बनकर ?

विवश तुम रहते हो !
मैं न रहूँगा तुम्हारे साथ !
मैं सूखने न दूँगा अपने मांस के रक्त को "
इस डर से वह दौड़ता है देख !

अब भी दौड़ता है देख !

40. व्यवसाय ही सुन्दर !

हे व्यवसाय ! तुम जुग जुग जिओ ! हे व्यवसाय ! तुम जुग जुग जिओ !
सुन्दर जग के स्पर्श के समान,
अक्षय विकास बढ़ेगा कई प्रकार ।
हे व्यवसाय ! जुग जुग जिओ । हे व्यवसाय ! जुग जुग जिओ ।

यह आसमान, धरती, आग, तालाब, हवा – इनके जन्म लेने के उस
दिन उत्पन्न हुई एक 'चेतना' । उससे, आकाश समेत
शुभ्र चाँदनी और व्यापक किरणें भी,
अनगिनित रूप में जन्म लिये थे ।

अणु शक्ति से चालित उस चेतना कर्म को
कहते हैं अखंड़ प्रकृति का व्यवसाय ।

नाशहीन बन चलित वह चेतना ही प्रजा के
व्यवसाय का मूल है – यों कहना उपयुक्त होगा ।
फिर भी, तुझसे श्रेष्ठ नहीं वह ।
क्योंकि, हमारी माँगें पूरी होती हैं तुझसे ।

अथक हमने साफ़ किया लोहे के हल को,
पर्वत सम धान प्रदान करनेवाली भुजाओं पर आओ तुम ।
गन्ने के मशीन के रंध्रों में तेल डालकर,
हम ने की मरम्मत मशीन की ।
इस देश की वस्तु – समृद्धि के लिए आनंदपूर्वक आओ तुम

गरम लोहे और जल के बूंद के समान हमारे
भुज दंड़ों पर के हे व्यवसाय! तेरी शक्ति
का सहारा है हमारी आज़ादी का स्रोत ।

हम और तुम आपस में घुल - मिलकर,
बने हैं पवित्रतम व्यवसायी!
जहाज़ की मरम्मत करेंगे, जहाज़ बनाएँगे ।
सौ सौ फूलों से मधुर मधु को एकत्रित करेंगे ।
हवाई जहाज़ों पर चढ़ इस जग पर शासन करेंगे ।

संशय न करो! ज्ञान बोध के
जग के ग्रन्थों को हमने छिपाया है मन में ।
धूल मिटायी हमने! हे कलंक रहित मणि!
बोलो, पास आओ, भुजा से भुजा मिलाओ ।
आनन्द! आनन्द!! यहाँ देखो ।

बाधा मिट गयी! गुलामी का अंत हुआ ।
हे व्यवसाय, तुम जुग जुग जिओ!
हे सुन्दर तमिल, तुम जुग जुग जिओ!
हे समृद्ध तमिल - राज्य, तुम जुग जुग जिओ ।

41. दरिद्रता का नाश ।

घर के गलीवाले दरवाज़े पर ताला लगते ही,
बाहर के चबूतरे पर आकर सोनेवाले गरीब लोग,
पशुशाला में, मच्छर – काट में, सार – भरी
मिट्टी पर सोनेवाले अगणित जन,
गली की दोनों ओर, कुत्तों से भगाये जाने पर भी,
वहीं सोकर रात गुज़ारनेवाले निस्सहाय लोग –
इन्हें प्रश्न करने का ज्ञान नहीं कि 'जगह दो सिर छिपाने' ।
हे शासक गण! तुम्हारी नज़रें इतनी बुरी क्यों हो गयी हैं?

यातायात के साधनों के अभाव में, ऊबड़ – खाबड़ ज़मीन पर,
क्रिमि कीटकों से भरे रास्तों में,
गंदे नालों में, मलविसर्जक घरों में, माँ
की गोदी के शिशु का रोना । पत्थर जोड़कर,
पकाकर, खाना निथारने चूलहा वह जलाती!
भोजन खाकर, वहीं सोते हैं सब!
उन्हें पता नहीं कि अपनी कमियों को दूर करें कैसे ?

हे शासक गण ! तुमने इनके लिए क्या किया है ?

सिर ढकने जगह न पाकर ये लोग दुखी हैं । तुम

क्या करते हो उनकी सहायता तुरंत किये बिना ?

बलिष्ट धनिकों की शिकायतें सुनकर, उनके

लूट मारने के कार्य में अपना हाथ बढ़ाते हो ।

' अष्ट दिशाओं में, इस मातृ - भूमि के गरीबों के क्रन्दन

के आँसू , चुभेंगे भालों के समान ' - क्या तुमने इस कहावत को सुना नहीं ?

सेवा से आनन्द भोगने की इच्छा हो तो

तुम तुरंत गरीबों की सेवा करो ।

42. मकान है, दीप नहीं ।

आज़ादी से लाभ नहीं, शिक्षा के बिना ।

महायुद्ध की घटना के समय एक दिन सबेरे
वड़िवेलन के घर आकर मुत्तन ने कहा,
" अजी, अपने घर का शासन आप ही करें,
सरकार को नहीं चाहिए । "
उस दिन के अपराह्न में आकर मुत्तन ने कहा –
" आपकी विदयुत्चालित गाड़ी को
सचमुच सरकार ने कहा कि नहीं चाहिए । "
दीप जलाते समय वह पुन : आया ।

" आपके घर के धान सब आप ही के हैं,
एक भी धान चाहिए नहीं सरकार को । "
वड़िवेलन ने जो इन बातों को सुना, कहा –
" अजी घर पाया, धान भी पाया, तेल
ज़रा सा भी नहीं । दीप नहीं । प्रकाश नहीं –
मुझे अधिकार हैं – इनसे क्या लाभ ? "
वह सच है । वड़िवेलन ने ठीक कहा ।
आज़ादी से लाभ नहीं, बिना शिक्षा के ।

43. अक्षय - कीर्ति ।

अक्षय वस्तु केवल कीर्ति एक ही है, अन्य
सब चीज़ें गायब हो जाती हैं ।

(अक्षय........)

रास्ते से चलो, रास्ते से लौटो ।
निन्दा के पात्र मत बनो तुम, प्यारे बच्चे ।

(अक्षय........)

प्राण के नस को भाषा कहते हैं, सुन्दर
त्रितमिल भाषा तमिलजनों की सीमा है ।
वर्षा से सूखा खेत भी लह लहा उठता है,
तुम जीवन भर तमिल को चाहो ।

कीर्तिवान कभी मरता नहीं,
अपयशी कभी जीता नहीं !
हे पुत्र ! ध्यान से सुन मेरी बात, मुझे
प्रसन्न रख, वही मेरी जीवन की सीमा है ।

44. बिनु भाषा, हम क्या हैं?

आँखों के बिना, जीवन
में सफलता प्राप्त हो सकती है।
रास्ते के बिना, गाँव
पगडंड़ी से पहुँचा जा सकता है।

सुन्दरता के बिना, नारी
किसी की पत्नी बन सकती है।
भाषा के बिना, क्या
जीवन सोचा भी जा सकता है?

भाषा ही तो श्वास है।
भाषा ही तो भावना है।
भाषा ही तो जीवन है।
भाषा ही तो आनन्द है।

भाषा ही तो मानव है।
भाषा ही तो माध्यम है।
भाषा ही तो संसार है।
भाषा के बिना हम क्या हैं?

45. प्रकृति में नहीं, मनुष्य को क्यों ?

फूल कई कई, खुशबू कई कई,
धर्म नहीं ;
जानवर कई कई, रंग कई कई,
भेद नहीं ।

जल कई कई, भूमि कई कई,
जातियाँ नहीं ;
संगीत कई कई, गीत कई कई,
वैर की आग नहीं ।

पर्वत कई कई, गड्ढ़े कई कई,
मूर्खता नहीं ;
लहरें कई कई, गहरे सागर कई कई,
धर्म वहाँ नहीं ।

मनुष्य कई कई, भाषाएँ कई कई,
सम्मानित ज्ञान होने पर भी,
निहित जाति, मत, धर्म की
हीनता से नाश हुए ।

46. वीरता पूर्वक खड़ो ।

गिरना सहज है
लज्जित न होना ।
वीरता पूर्वक खड़े रहो ।

रोनेवाला कायर है
भय की प्रकृति
न्यून भावना को दूर करो ।

पूजा किसकी करें ?
मज़दूर की पूजा करो ।

पूर्ण रूप से जग को
आगे बढ़ने दो ।
बाधाओं पर होगा विजय ।

47. शिक्षा पाओ ।

पतले सालने के लिए,
खाने के लिए, हाथ में एक
पैसे के लिए, आँखें थककर
सोने के लिए, बनने
कपड़े के लिए तरसनेवाले
गरीब को भी बड़ा
अमीर बना देती है शिशा ।

शिशा सीखते समय कठिनता
होगी, पढ़कर
पूरा करने पर पूर्ण
प्रसन्नता । समापन के बाद,
जो कुछ स्पर्श किया, उसमें जय ही जय ।
बिना कष्ट के जीवन बिता सकते हैं ।
अवश्य शिक्षा पाओ ।

अशिक्षित मूर्ख को
' आ ' कहते – शिक्षित को
हर कोई ' आइए '
कह पुकारते हैं । धन
शिक्षित के पास जा पहुँचता है ।
अशिक्षित को मिलती है गंजी की मटकी ।
वह भी अंदर से खाली !

48. प्रकृति - संपदा।

विशाल आकाश, ब्रह्मांड़, हर कहीं
उदित वस्तुओं का तू है मूलाधार!

व्याप्त समीर, जल, पृथ्वी
अरुण आग – सब कुछ तू ने है प्रदान किया।

प्रत्यक्ष सूर्य, चाँद, बहु –
व्याप्त जग का तू है बीज!

जानने पर, तेरे सब कार्यों में है
नयापन! नयापन! नयापन!

बनाया चेतन को, वहाँ – गूँजनेवाले
लहरों को बनाया तू ने!

प्रेम से देखने, धरती को
चार भागों[1] में तू ने विस्तार किया!

वैभवपूर्ण वस्तुओं को बनाया, साहित्य भरी
प्राचीन तमिल को भाषित किया!

संगीतमय तमिल को दिया पक्षियों और
सुन्दर कमरवालियों के सुन्दर कंठ में!

चंचल किया सब कुछ, सभी प्राणियों में
संचालन प्रदान किया।

---

1. तमिल भूभाग को प्राचीन साहित्य ने चार भागों – कुरिन्जि, मुल्लै, मरुदम, नेयदल – में बाँटा है।

शब्द और संगीत से आनन्द, मुझे
भोगने को दिया ! अरे, रे !
अशिक्षित मयूर, मुर्गी, कबूतर
दिखानेवाले सुन्दरतर डोलन में,
दुख को दूर करनेवाली नृत्य कला को
तू ने ही संभव किया । तुम जुग जुग जिओ ।

❋

49. प्रभात।

सन्नाटे में प्रकाशमान प्रभात, अति
सुन्दर धन तिमिर भरे बाग़ में ।

सन्नाटे में........

घरवालों की बोली में तमिल – मधु फूट पड़ी ।
आँगन में शीतल जल छलका गया ।
आँखों को मधुर लगे जमीन पर बनाये गये चूने के चित्र ।
स्नान करके, सब ने पहना सुन्दर वेष – भूषा ।

सन्नाटे में........

मातु – पिता घर में आसन पर बैठकर, अपने
बच्चों के साथ अल्पाहार खाकर,
सकाल अपने हाथों में दर्द सहनकर,
सप्रेम करने लगे मेहनत ।

सन्नाटे में........

50. गगन - गायक ।

क्या अंबर ने ही गाया ? गगन - चन्द्रिका ने गाया ?
मधु पीकर लघु भ्रमर ने ऊपर चढ़कर
सुसंगीत का आलापन किया क्या ? प्रकंप धन - गर्जन ने
भी सीखकर ललित संगीत अधिक मधुरिमा को ही प्रदान किया हैं क्या ?

हवाई जहाज़ पर से महा तमिल संगीतज्ञ द्वारा
बजायी जानेवाली बाँसुरी क्या ? वीणा क्या ? एक अकेली नारी से
जग जन की प्रसन्नता के लिए आवाज़ देकर
बरसाये जानेवाला अमृत है क्या ? – यों जब मैं अपने आपमें बोलने लगा,

तो तुम विश्वास न करोगे । सीधे मेरी आँखों के सामने आकर
आकाश में गानेवाले पक्षी ने दर्शन दिया ।
व्याप्त अखंड़ आकाश में हर्ष की धारा मिलाकर
तैरनेवाले पक्षी को देख, मैंने कहा –

तुम्हारे सुन्दर पर और छोटी सी काली आँख,
मेरी नज़रों से ओझल होने तक की दूरी पर ; उन्नत आकाश में
सतत तुम गाते हो । सस्य श्यामल तमिल जन,
खोजते ही रहेंगे तुझमें ' तेन्पांगु ' को ।

तुम्हें प्राप्त हो अटूट प्रसन्नता !
हमें प्राप्त हो तुम्हारे संगीत की वर्षा से आनन्द !!

51. महाबलिपुरम् की यात्रा ।

मद्रास में एक नाला, पांड़ि
चेरी नगर तक लंबा ।
उसमें चलते लघु नाव, तैरते
सुन्दर हंसों के समान!
अपना प्यारा दोस्त और मैं, एक
पर चढ़ बैठने के बाद,
मद्रास छोड़ निकल पड़ा वह नाव । फिर,
तेज़ हुई उसकी रफ़्तार ।

दक्षिण की दिशाओं की ओर, हमारी
यात्रा के क्षणों में, विशाल
परिसरों में हर कहीं, धूप से
बिखरे स्वर्णिम प्रकाश को हम ने देखा ।
झुके माथे से मुख को, सीधे
जल में देख विस्मित
और प्रसन्न हुए। सारे जल में
प्रतिबिंबित है प्रकाशमान आकाश!

'संजीवि पर्वत की घाटी' नामक
सुन्दर पुस्तक खोलकर,
आकाशवाणी से, कानों
में सुन्दर तमिल सुनते हुए,

पाँच – छे पृष्ट पढ़ सका, एक सखा
बड़ी चाव से ।
उस समय, अरुण सूर्य ने, हमें
दिया बहुत बड़ा धोखा ।

अति कर्कश वृषभ ने, अपनी
नथुनी से छूटकर,
पास में स्थित कीचड़ में, दौड़कर,
गिरा दिया गाड़ी की चाक को ।
इसी प्रकार पूरा पूरा झुक
गया गोलाकार सूर्य भी !
प्रत्यक्ष महाप्रदेश में हर कहीं, अंधेरा
छा गया । नाव चलने लगा ।

खुले जल – प्रदेश से, हम ने, सामने
एक और दृश्य देखा ।
नाटा ताड़फल वृक्ष एक, उसके
पत्ते फैले थे सुन्दर कुंतलों के समान ।
उन पत्तों के नाळ हाथों के समान आपस में मेल खाने से,
आनन्द भरे शब्दों का उच्चारण करते समय
फूट पड़नेवाले अनियंत्रित हास्य को, उसने
' गल गल ' नाद करते हुए ऊपर से झोंका ।

नज़रों की सीमा तक की
पूरब की दिशा में,

दिखायी पड़ी थोड़ी रोशनी । उस दिन
हमें पता लगा कि वह पूर्णिमा है ।
गोलाकार शीत चंद्रमा कहाँ ? उसके
आगमन की प्रतीक्षा में हम रहे ।
ऊँट पर सवार होनेवाले राजा के समान,
चाँद, एक पेड़ के पास प्रत्यक्ष होने लगा ।

मोती के प्रकाश जैसा वह चेहरा, आज
पूर्ण रूप से लाल हो गया क्यों? –
" हे शीतकर ! कहो । इतना
क्रोध तुझे मिला किससे ? " – हम ने पूछा ।
उत्तर के रूप में हमारे ह्र्दय में, चंद्रमा
ने कहा कुछ । देखो तो सही !
जी घबरा उठा हमारा,
जब हमने देखा पीछे मुड़कर ।

नाव की रस्सी को एक व्यक्ति, अपने
दोनों बाहुओं से खींच रहा है । हम ने देखा ।
यह दृश्य हम से सहा नहीं गया । वह
किनारे की ओर चलने लगा ।
अपने पीठ के बल पर, पर्वत
सम नाव को एक भुजबलशाली
खींचने लगा । दूसरा एक उसे
धकेलने लगा पीछे, से, अति श्रम से ।

इस संसार में, सुन्दर
आनन्द नामक किनारा पार करने
सतत उत्सुक और प्रयत्नशील पुरुष को, अपनी
भुजाओं के सिवाय अन्य चारा ही क्या है ?
' निश्चय ही कोई चारा नहीं ' – इसे
मैं ने दुहराया बीस बार ।
मन से प्रसन्न ताराधिपति, मोतियों सा
प्रकाश छिटकाकर, चढ़ा ऊपर ।

नीलांबर पहनकर, वहाँ
खड़ी है ऊँची आकाश – कन्या ।
उसने देखा युवक रूपी चाँद को । चाँद ने
उस कन्या की मोतियों के हार को अपने हाथों
सें खींचकर, चारों ओर बिखेर देने से,
आभायुक्त तारों का ढ़ेर बन गया ।
निशि के अंत में, प्रात: काल,
हम पहुँचे बलिपुरम के किनारे ।

52. सुबह - शाम और मेरा जीवन ।

सुबह

प्रकाश को पाया सागर पर, अच्छे
भावों को पाया जी में !
फिसलते पाया स्वर्णिम रश्मि को,
भरपूर पाया आनन्द ।
बूँद में पायी मोती, प्रसन्नता को
नाचते पाया आँखों में ।
स्पष्ट पाया संसार को, मेरे
कार्यों में पाया धर्म !

शाम

अस्त होते पाया सूर्य को, जाके
अदृश्य होते पाया थकान को !
भरे पाया तारों को, मेरे
विचारों में पाया नयेपन को ।
घटते पाया ताप को, मेरे
साथ पाया शांति को ।
मिटते पाया शीतल को, ऊपर
उठते पाया जीवन को !

53. पवन ।

पोदिगै पर्वत से उठकर, चंदन की
ताज़ी खुशबू में डूबकर, मकरंद समेटकर,
नदी का आलिंगन कर, प्रपात की बाहुएँ हिलाकर, दक्षिण के
श्रेष्ठ मुक्ता – भर सागर के लहरों की शिखा पर चढ़
नाचकर, बाँस में वंशी बजाकर,
केवड़े के खड्ग – सम पत्तों को घुमाकर,
पके नारियल पेड़ के मृदु शाखादंड़ का रसास्वादन कर,
मोतियों को बिखेरकर, तमिल राज्य की गली की तरफ़ देखकर,

सांझ में नव चमेली को विकसित कर, धान के
पौधों के तले जल का रोमांचन कर, मेरे
विचारमान बदन के हर कण को पुलकित कर,
खजाना आएगा एक ! उसका नाम है पवन ।
' मेथी के घड़े को बिल्ली ने धकेल दिया नीचे ' –
कहती हुई मेरी पत्नी कमरे में गयी ।
शाम का समय । खेतों में मैं रहा अकेला ।
वहाँ के झूलनेवाले तख़्ते पर लेटा रहा ।

बगल में बैठकर, मुस्कुराती बोलती थी,
हरी भरी तमिल के रस में प्यार मिलाकर ।
अति – शीघ्र – गमना उस नारी को
तुरंत मेरे पास आना चाहिए ।

तत्काल कमरे में जो बिल्ली आयी थी, उस पर
असहनीय क्रोध मुझे आया । अन्य अवसर पर,
दृढ़ सौ सौ बिल्लियाँ आकर, सभी चीज़ों का
नाश भी कर दें, तो मुझे चिन्ता नहीं होगी ।

जीवन रूपी सुमन से टपकनेवाले आनन्द – मधु को
मानव के अकेलेपन में प्राप्त करना असंभव है ।
मिथुन के बिछुड़न से दो दिलों
में दुख होना सहज है ; वहाँ
लेटे रहनेवाले मुझे – ' अकेलापन ', ' संध्या '–
इन दोनों ने विषैले संसार में धकेल दिया ।
काश ! उसके शरीर की शीतलता, कोमलता,
सुगंधता ! इनका पान करने मेरा मन रमा ।

लगा कि पीछे से अनजाने आकर एक सजनी,
मुझे उत्तेजित करती हुई पास आ लेटी ।
माँग उतारे उसके कुंतल नीचे आ गिरे,
स्पर्श किया उसने मृदु कर से मुझे ।
अबोध खुशियों के हाव – भाव उसने किये ।
मैं ने सोचा –' करने दो ' । सामने एक नारी ने
आकर कहा, " वियोग से दुखी हूँ, ओह ! "
यह बोलनेवाली है मेरी पत्नी ।
दूसरी जो थी, " पवन – कन्या " ।

54. दरवाज़ा बोलता है क्या ?

काम – देव भगाने से, तेज़ी से आया हुआ वेलुमुरुगन ने
कुछ भी कहे बिना, दो उंगलियों से गली के
दरवाज़े को स्पर्श किया । उस ने सुनी एक आवाज़ –
' खोल दिया है । ' ओह ! लकड़ी का दरवाज़ा भी बोलता है क्या ?

' क्या विचित्र है ! ' खाट की आतुरता से दूसरे ही क्षण
छोटे दरवाज़े के खुलने के प्रकाश में, उसने
अपनी प्यारी प्रियतमा के हस्तकमलों का स्पर्श किया !
मृदु मुस्कान पाकर वह जी भर पुलकित हुआ । " क्या री !

दरवाज़ा खटखटाने के पहले ही तुमने खोल दिया ताला ", कहा उसने ।
" वियोग को न सहनेवाली नारी हूँ मैं ।
विरही के लौटने तक यह गरीबिन, बाट जोहती रहती है,
गली में लकड़ी के दरवाज़े पर खड़े होकर ।

55. भारती का हृदय ।

जाति का उन्मूलन करने एक, नेक
तमिल का विकास करने दूसरा एक ।
आधे को अगर देश भूलें, तो दूसरा
आधा चमकेगा नहीं ।

जाति को बाहर निकाल फेंकने पर, सरोवर
स्वच्छ शीतल जल को ग्रहण करेगा ।
जाति नामक श्रृंखला से मुक्त भुजा ही
स्वच्छ शीतल तलवार का धारण कर सकेगी ।

यों कहते हैं मेरे पास, वे
मधुर शब्द मेरे कानों से
आज भी ओझल नहीं हुए हैं, क्योंकि
मैं अभी जिन्दा हूँ ।
हमारे भारतीजी के नेक
हरे भरे वात्सल्य ह्रदय से
उत्पन्न ये सुन्दर शब्द, हमारी
सुन्दर तमिल के हैं सुन्दर श्वास ।

‘ ऊँच – नीच कोई है नहीं, यह
मैं ऊपर ऊपर ही बोल रहा हूँ ।
चौराहे में चार हज़ार जनता को देखना है ।
त्वचा से नीच कहलानेवाले
सखाओं के हाथ पके भोजन को सब खा लेते हैं ।
और भी, वह भारती कहते हैं –
‘ कुचलो जाति के जड़ को । ’

56. भारत देश को आज़ादी चाहिए ।

हे भगवान् ! हमारा पतन हमारा जीवन है तेरे हाथों में,
व्यर्थ हमने जो पीड़ा भोगी, क्या कहें उसके बारे में ?
तुम से हमारी यही प्रार्थना है कि हमें आनंद प्रदान करो ।

इस गहरे सागर और पृथ्वी पर की
मधुर भारत भूमि को
अष्ट दिशाएँ प्रशंसा करने की उन्नत दिशा पर पहुँचाओ ।

छूनेवाले अधिकार – ध्वजा को उठाओ आकाश तक ।
इस देश का नाश हो गया ।
विधि ने क्यों किया यह ? हमें पता नहीं ।
भारतीय बन – गये पुश्तैनी गुलाम !
सात समुन्दरों में व्याप्त हमारा यश खो गया !
हम बने आज दरीद्र नामी !

इक पल अपनी आँख की छोर से देखें दिशाओं को,
तो तमाम दुश्मनी बन जाए मिट्टी की धूल !

महासमुद्र का सारा जल आग में स्वाहा बन जाने के लिए
तीर चलानेवाले हे मुरुग भगवान !
तुम्हारी पूजा करने पर भी हमें यह कमी क्यों ?
दरिद्रता, रोग, भय आदि बुरे
रास्तों पर हमें पहुँचानेवाले बाधाओं को दूर करो ।
बुराई से बचाओ हमारे देश को ।
हमें दीजिए सुजीवन प्रदान करनेवाली आज़ादी ।

57. धर्म करो ।

शुरू करो काम, शुरू करो धर्म !
समुंदर में, आसमान में, सुन्दर धरती पर,
समस्त जीव – राशि और मानव – समुदाय के
जीवनार्थ, प्रेम के छाते के तले
संसार पर शासन किया था,
उन्नति के साथ हमारे लोगों ने ।

कवियों ने ! ' जग के स्वर्णिम साहित्य को '
रचा ! वीरों ने, ज्ञान से अज्ञान पर
वार कराने, शांति की रक्षा करने,
आँख मूँदि बिना अष्ट दिशाओं को देखने,
शक्तिशाली हाथ को बायी ओर की तलवार पर रखकर,
धर्म के मार्ग पर चलकर, आनन्द रूपी प्रपात में स्नान किया ।

शुरू करों काम ! सीमाहीन जग
हमारी आज्ञा का पालन करने,
बाधा बनी दीवार गिरकर चूर चूर होने,
शरू करो ! वैभवपूर्ण तमिल की बोली से, करनी से,
दीर्घ धन भुजाओं से, शुरू करो काम ।

इस जग की अगणित जातियाँ,
भास्वर निर्मित मकान पर लगी हुई जलती लकडियाँ !
जाति पर मृत्यु की घंटी बजाने, अति पुरातन
तमिल राज्य को जग में अग्र स्थान पर बिठाने,
' धर्म ही आनन्द ' मानकर, शुरू करो ।

58. बच्चा।

लेश प्रकंपित ज्योत्स्ना उस
नन्हे – मुन्ने बच्चे की मुस्कान ! नेक
आनन्द चाहनेवाले यहाँ के लोगों को
महान कार्य करके ही उसे पाना है क्या ?

कच्चे केले के पुष्पाग्र के समान
कांतियुक्त पलकों को फाड़कर प्रकट होनेवाली आँखों से
पुरातन जग ने नयेपन को पा लिया है क्या ?
वह क्या है ? उसे जाने कौन ?
सोने के परिपक्व अनार को चीरने से निकला हुआ
माणिक्य है उस बच्चे की मुस्कान ।

आइए ! आलिंगन करके प्रसन्न होना नहीं क्या ?
देखिए ! उसे समेटकर पान करना नहीं क्या ?
अरुण प्रवाल की कटोरी से गिरे अमृत के समान
वह मुस्कुराया ।
बच्चे के हँसने से यह जग भी हँसा ।
आकाश भी हँसा ।

59. बच्चों की पाठशाला चाहिए ।

घोंसले की नन्ही चिड़िया
घर के आंगन में गिर पड़ी ।
वीणा के तारों की झंकृति के समान,
' किच - किच ' कूजन किया उसने ।
राई - भर आँखों से माँ को टटोल रही,
आहार जुटाने जो माँ गयी थी, लौटी नहीं अभी ।
द्रोण पुष्प के पुष्पाग्र सम, वह

लघु चरण उठाकर चलने लगी । छोटे
परों से वह उड़ सकेगी क्या ?
बिजली से चलनेवाले पंखे के समान परों से
तेज़ी से दौड़कर आयी माँ - चिड़िया ।
नाम मात्र शिक्षा से भी रहित अपनी
मुन्नी की दशा जान, दुखी होकर,
' इधर आ ' - कहती ' इच - इच ' करने लगी ।
उसको उधर जाते देख, तड़पने लगी ।

" कौए और गीध की प्रचुरता है हर कहीं ।
मार - काट और हत्या का व्यापन है हर कहीं ।
दुखदायी संसार का ज्ञान चाहिए थोड़ा - बहुत ।

हे अबोध बच्ची ! वेग आओ इस ओर ।"
कहा उसने ! घबराकर चारों ओर देखा उसने ।

ऊपर से एक कौआ नज़र उतारकर देख,
कपास जैसी नन्ही चिड़िया को उड़ा ले गया !
उठ चलनेवाले नन्हे मुन्ने बच्चों को
खोना पड़ेगा ।
बच्चों की पाठशालाएँ चाहिए ।

60. पढ़ो ! पढ़ो ! पढ़ो !

ग्रन्थ पढ़ो, संग तमिल
ग्रन्थ पढ़ो, नियमानुसार
ग्रन्थ पढ़ो ।

सुबह पढ़ो, दुपहर पढ़ो ।
शाम को, रात को अर्थ – बोध के साथ पढ़ो, ग्रन्थ पढ़ो, ।

पढ़ने योग्य सब कुछ पढ़ो ।
वल्लुवर के कहे अनुसार,
सीखना ही चाहिए उसके अनुसार ।
अशिक्षित कैसे जिएँगे ? ग्रन्थ पढ़ो !

धर्म पढ़ो, अर्थ पढ़ो,
उसी प्रकार प्रेम पढ़ो ।
अदृश्य तमिल के चार धर्मों ने
पुनः जन्म लिया मानकर ग्रन्थ पढ़ो ।

प्रेम तत्व पढ़ो, उसी प्रकार
वीर तत्व पढ़ो भली – भाँति ।
शनैः शनैः विद्वत्तता आएगी ।
मेरे कहे अनुसार पढ़ो ।

जाति नामक पतन की सीढ़ी,
हम सब के लिए नाकाम की चीज़।
बुराई आ जाएगी, फिर से ग्रन्थ पढ़ो ।

झूठ में पौना सेर,
धोखे में पाव सेर,
जग को ठगाने के लिए
स्थित ग्रन्थों की तुलना कैसे करें ?

आरंभ में होगा दुख,
फिर भी ग़ौर से पढ़ो ।
असीम आनन्द होगा फिर से,
बड़ों के कहे अनुसार ग्रन्थ पढ़ो ।

61. जीवन ।

निड़रता ही जीवन है, सुखद
आनंद को प्रदान करनेवाला है जीवन ।
झोंपड़ी में जीना ही क्यों न हो
सम्मान सहित जीना ही जीवन है ।

पर्वत की चोटी पर के दीप के समान
संसार में ख्याति प्राप्त
सस्य – श्यामल तमिलनाडु में, तमिल
के प्रवाह को अपने साथ लेकर जीना ही जीवन है ।

उन्नत ज्ञान समेत है जीवन, नेक
तीन तमिलों का अध्ययन करना जीवन है !
कानों से सुनकर और आँखों से देखकर,
चित्र बनाना है ।

आधा – अधूरा व्यवसाय नहीं करना है ।
ह्रदय में उठनेवाले विचारों को लिखो ।
हर चीज़ में अपने को व्यक्त करो ।
कला के आनन्द में जीना ही जीना है ।

हज़ारों जातियों को मानकर,
सियार जैसे लोगों के पैरों पर गिराकर,
कुत्तों की भाँति हमें आपस में
हर दिन लड़ानेवाले धर्मों को

पवित्र मानकर, कई
बाधाओं को भोगे बिना,
तेरे मेरे कहने को एक मानने से
मेरे हृदय में विकसित होनेवाला है जीवन ।

62. ढंका बजाओ ।

सभी को नेक आनन्द,
सभी को संपदाएँ,
अष्ट – सिद्धियाँ प्राप्त हुईं, कहकर ढंका बजाओ !
ढ़ंका बजाओ ! जीवन की
सभी श्रृंखलाएँ दूर हुईं, कहकर ढंका बजाओ !

अभाव नामक रोग
के बिना, शिक्षा का फल
सब को, कहकर
ढंका बजाओ । जीवन की
निन्दा दूर हुई, कहकर
ढंका बजाओ ।

साक्षरता इस जीवन में
आविर्भाव होने के लिए अंकुरित [1]तीनों
तमिल विकसित हुए, कहकर
ढंका बजाओ । जीवन की
प्रगाढ़ कीर्ति गाकर,
ढंका बजाओ ।

---

1. साहित्य, संगीत और नाटक – ये तीन प्रकार के तमिल हैं ।

जन्म देकर संसार को प्रदान करना,
माँ का कर्तव्य । मेहनत
सभी का कर्तव्य , कहकर
ढंका बजाओ । जीवन की
मधु वर्षा हुई, कहकर
ढंका बजाओ ।

63. हाँ है ।

जा रहे थे, और भी आगे
जा रहे थे ।
जी जलानेवाला ज़ालिम सूरज पश्चिम की दिशा में
जा रहा था । पोन्नन और पोन्नी भी उसी दिशा में ।

" पकते फ़नस के पेड़ पर, काँटों वाली झाड़ी में,
सुनहरे प्रकाश को देखो ।" पोन्नी ने कहा ।
" गिरनेवाले सूर्य की किरणें सब के लिए समान हैं "
उत्तर दिया पोन्नन ने । और आगे जा रहे थे ।

" कबूतर की जोड़ी में मर्द के पास मादा
उठानेवाली मुसीबत को देखो ।" पोन्नी ने कहा ।
" माँगी चीज़ को पा लेने के बाद भी क्या मुसीबत ?"
उसने जवाब दिया । और आगे जा रहे थे ।

" सुन्दर पंखुड़ियोंवाले कमल के शहद के लिए भ्रमर
झूम रहे हैं, देखो ।" पोन्नी ने कहा ।
" धनिक का घर खुला है री ! भूख मिटने तक ।"
उसने उत्तर दिया । और आगे जा रहे थे ।

" लाल कनेरे फूल को क्या बाधा है ?
आँखें लाल हो गयी हैं, देखो ।" पोत्री ने कहा ।
" वहाँ चमेली का हँसना, अपनी शाखा को डोलते देख ।"
उसने जवाब दिया । और आगे जा रहे थे ।

" जीना सोचकर इस जग को जिन्होंने ठुकरा दिया था,
वे फिर से लौट आये हैं, देखो ।" पोत्री ने कहा ।
" इह - लोक के सारे आनंदों को इन्होंने
कभी माँगा नहीं था ।" कहा उसने । और आगे जा रहे थे वे ।

*

64. माँ की चाह।

पैरों में पत्तों के समान चप्पल पहनकर,
हाथ में खुला छाता लेकर,
विद्यालय की ओर, उबले
दूध जैसी बोली लेकर, हे लड़की!
तुम्हें जाते देखने का मेरा आनन्द अब शेष है।

ऊपर कुरता पहनकर, छोटा सा लहंगा पहनकर,
घर में नाचनेवाली मयूरी के समान रहकर,
हाथों में पुस्तकें लेकर, गली से होकर,
निशित बाणों के समान नज़रें थामकर,
तुम्हें जाते देखना है इस माँ को अपनी आँखों से।

'चित्र – कला सीखी तेरी बेटी ने, काव्य को
सीखा' – यों गाँववाले तेरी प्रशंसा करने पर,
हे मेरी आँख! इस प्रसन्नता का सहन करेंगे क्या मेरे कान?
तेरी कविता लिखने के कौशल से शांत
हुआ गाँव – यों किस दिन प्रशंसा करेंगे जग के लोग?

आम के पिन्दों के समान छोटी नज़रोंवाली हे छोटी!
यौवन की दशा पहुँचकर, प्रेम –
जीवन के लिए एक वर को देख, उसे बताकर,
'चाहिए यह' कहनेवाली तेरी बोली है,
मेरे लिए शहद! फल! मीठी मिश्री।

फूल और खुशबू, आत्मा और शरीर के समान,
हे स्वर्ण! तुम अपने प्रेमी से मिलकर,
लेश मात्र पतन के बिना धर्माचरण करती हुई,
चमन में धूम आओ – यह देखने मिलेगा क्या ?
हे मेरी आँख! बोल उठो प्यार से ।

मुर्गे के समान सिर ऊपर उठाकर, चीते
के समान वैरियों पर कूद पड़नेवाले
बच्चों को जन्म देकर, सकल संपदाएँ
कई पाकर, देश की रक्षा करते हुए
देखने की चाह है मेरी छोटी सी ।

65. भाई ! तुम्हें कौन - सा चाहिए ?

घर के पिछले भाग में एक चिड़िया,
अच्छे पंजर में एक तोता,
कहो इनमें कौनसा है
जो दुखदायी नहीं ?

चमेली पर एक भ्रमर,
धन की गठरी पर एक लड़का,
इन दोनों में अभाव रहित जीवन
कौन - सा है, बताओ तो सही ।

त्रुटियों से भरा नया ग्रन्थ,
दूसरों के ग्रंथ देख लिखा गया महा - ग्रन्थ,
जग में तुम्हें कौन - सा चाहिए,
मुँह खोलकर कहो, भाई ।

66. सत्य ही सत्य

मनुष्य खाता है ; अन्य भी खाते हैं !
अन्य सोते हैं ; मनुष्य भी सोता है !
प्रसन्न होते अन्य प्राणी ; यह भी उसी प्रकार !
दुखी होता यह ; दुखी होते अन्य भी
मनुष्य जाननेवाला है ; अन्य भी जानते हैं ।
मनुष्य को ; अन्य प्राणियों को,
अंग हैं ; नियम हैं !

धरती पर जीनेवाले प्राणियों में मनुष्य क्यों
'मधुर' और 'श्रेष्ठ' माना जाता है ?
उदित जानवर से लेकर लघु मच्छर तक
स्थित प्राणियों में जो नहीं है वह क्या है ?
मनुष्य के पास निहित विशेषता क्या ?
सुनिए, उसे सुनिए, सुनो तो सही ।

'मन की बात को उपस्थित व्यक्तियों से कहना' –
यह है केवल मनुष्य के पास ।
अन्य प्राणियों के पास प्रचार करने की
अलग एक विशिष्टता लेशमात्र भी नहीं,
रत्ती भर भी नहीं, यह जानो !
जिसको जिय ने देखा उसे जग को कहना –
यह अन्य प्राणियों से मनुष्य को पृथक बनाता है ।
यही मनुष्य को गौरव प्रदान करता है ।

भयभीत होकर या दूसरों से लाभ जानकर,
अपने पेट पालने की इच्छा से, प्राप्त
अपने लक्ष्य को दूसरों के हाथ बेचनेवाला,
सत्यवचन का पालन न करनेवाला चरित्रहीन,
लघु मच्छरों से भी अधम है ।

मनुष्यों में स्थित मनुष्यत्व को 'लक्ष्य' कहेंगे ज्ञानी ।
लक्ष्य को दाम पर बेचनेवाला मनुष्य,
मनुष्यों के बीच निवास करनेवाला मनुष्य – जंतु है ।
जी छिपाकर बोलना,
क्या कपटता नहीं है ? हे महाजग के वासी !

67. गाड़ीवाला ।

वहाँ देख री, वही मेरे पति हैं ।

वहाँ देख री!

नये बैलों की गाड़ी हाँकते हुए,

जा रहे हैं मुझे दुखी बनाकर ।

वहाँ देख री!

अंदर रहनेवाले यजमान श्रेष्ठि हैं ।

सामने बैठे हैं मेरे 'चीनी का ढ़ेला' ।

दिखायी नहीं देता क्या सिर पर का पागा री ?

उन्हें चेरन राजा कहें तो उसमें क्या अपवाद ?

वहाँ देख री!

पाँच रुपये मेरे पास दिये ।

संध्या से पहले आना मंजूर किया ।

यदि शाम पर लौट न सकूँ तो, नारी! लो,

'प्रेम के चुंबन' कहके दे चले!

वहाँ देख री!

68. कच्चे धागे पर नारियाँ ।

चलती – फिरती तस्वीरें ! अरे रे !
बीच गली में कच्चे धागे को सुधारनेवाली नारियाँ !
चलती – फिरती तस्वीरें !

बाया हाथ धागे की चाक को घुमाता है सुंदर,
थाम के पकड़ता दाहिना हाथ, लंबा काँटा चलता है ।
चलती – फिरती तस्वीरें !

पैरों से दबाने पर चलता करघा ।
मछली समान नज़रें धागे के साथ चलतीं ।
बालों के गुच्छे में सुगंध पुष्पों का जंगल !
ल· [illegible]सी कमर हिलती अति सुंदर ।
चलती – फिरती तस्वीरें !

संसार को चाहिए पोशाक ।
पोषाक के लिए चाहिए करघा ।
चलती नारियाँ यह विचार करतीं ।
प्राणों से, भावों से सेवा करतीं ।
चलती – फिरती तस्वीरें ।

69. जुलाहे की याद !

धागे में उसके फूल जैसे
केश ! करघे का, धागा ।

अपराध किया – यह सोचकर माँ ने उसे भगा दिया । मेरी
आँखों में वह भर गयी ।
काम खत्म होते ही, भोजन समाप्त कर,
सोने के पहले मुझे देख नारी ने कहा, –
" लिखा क्या तुमने अगला पत्र
अपनी माँ को ? " मधु ओंठों का पान
मैंने किया, क्या यही मेरा अपराध था ?

धागे के तार मैं ने जोड़े, मुझे
इन्हें करघे में जोड़ना है ।
जग की लाज को, मुझे
बचाना भी है । अति
सुंदर अपने शीतल चमन को,
मेरा जीवन – साथी बनाने
पूछना है माँ से ।

70. कृषक - नारी !

तुच्छ घास निकाल रही है, वहाँ,
सुदृढ़ गात्र सुन्दरी, पतली कमरवाली, वहाँ
तुच्छ घास निकाल रही है !

हरे - भरे खेत में सहेलियों के साथ,
कोमल गन्ने की छड़ियों के बीच लाल गन्ने के समान,
तुच्छ घास निकाल रही है ।

झुके कमल का
मुख मुड़ेगा क्या (मेरी ओर) ?
वह कविता - चित्र
मुझे चाहेगा क्या ?
बिखर गिर पड़े काले केशों के
प्रपात के पानी में कब नहा सकूँगा मैं ?

(तुच्छ घास.........)

पके धान की रखवाली करना है ।
सार्वजनिक हित के कार्य करना है । हाँ !
इसी विचार से,
मेरी प्रिय नारी,
झुकी पीठ से, ठन ठन की चूड़ियों से,
जोर से चलनेवाली लाल उँगली की थकान से -

(तुच्छ घास ....)

71. कारखाने का मज़दूर ।

हे कारखाने का शंख! तुम क्यों नहीं बजते? समय
पाँच बजने पर भी, कपड़े के मिल में ....

सुबह से कलेजा पसीजकर, उसने
काम किया । मेरे घर में क़दम रखने ।
(हे कारखाने ....)

प्राची की ओर धूप उतरने लगी ।
गली की ओर देख देख मेरी आँखें थकीं ।
और, उनकी हर बात सुखद लगी ।
आकाश को फाड़नेवाला तुम्हारा कंठ क्यों सूखा?
(हे कारखाने ......)

नहाने में इक पल बीत जाता है ।
बैठे बैठे बातें करने में इक पल बीत जाता है ।
भोजन में थोड़ा समय बीत ही जाता है । पर,
भोर के तारे के उदय होने तक प्रेम – मधु बरसता है ।

72. लोहे के कर्मागार का कर्मचारी ।

गंदे कपड़ों में धर्म से जुड़े
वही प्राण मेरे प्रिय के प्राण हैं ।
मज़बूत बनाने जलाकर, लोहे को उठाकर
श्रम से, संवेदन से जग को बनाता है ।

(गंदे कपड़ों में.......)

फलों का बाग़ और तोते के समान
मैं और अपना प्राणेश्वर !
दिन का समय बिताने के बाद,
वह अविलंब जाता है कर्मागार ।
आत्म – गौरव की बात सोचकर,
रात में नौकरी न करना, अपराध है ।
दग्ध – आग में लोहे की चीज़ें द्रवित होते देख,
जागरूक रहकर ज़रूरत की वस्तुएँ बनाता है ।

(गंदे कपड़ों में.......)

“ धर्माचरण से प्राप्त आनन्द ही आनन्द है ।
दूसरों की भलाई न करनेवाले पाते हैं दुख ।
मरनेवाला यह शरीर मर जाने के पहले,
‘ धर्म करो, धर्म करो ’ घोषणा से जब ज्ञान पुकारता है,
तो क्या मृत के समान रह जाऊँ ? ” कहते हैं मेरे पति ।

(गंदे कपड़ों में.......)

73. सूप – टोकरियाँ बनानेवाला ।

पतली बाँस को फोड़ो, लकड़ी को चीरो,
हाथ का काम खत्म कर देंगे, हमारे
बच्चे भूख से वेग आवें, तो
बासी खाना दे देंगे ।

बनाया गया आटा और शहद
तुराई के बेल के पास, उस
ऊँचे घड़े को खोलकर, रीछ
ढकेल देगा ज़मीन पर इस समय ।

टोकरियाँ और सूप – यह काम मैं ने पूरा किया ।
चिड़िया की परों के समान, अब
ढकने का एक प्लेट और बच्चों का एक सूप
बनाने का ही तो काम बाक़ी रह गया ।

जंगल काटने अनुपयोगी
चाकू को तेज़ कर, तुमने
उठाया बाँस को चीरने ।
उठो, हे आँख – सम मेरी नारी !

हम दोनों एक जोड़ में,
साथ मिलकर मेहनत करते समय, हमारी
नसों में दौड़नेवाले प्राणों के संचार के बारे में
कुछ कहा नहीं जा सकता ।

गाना छोड़कर, तुम से
दी गयी पान – सुपारी,
उसके साथ जुड़ी हुई तुम्हारी आँखों की नज़रें,
मेरी जान को निचोड़ रही हैं ।

74. चिड़ियाँवाला ।

चिड़ियाँवाला आकर
गाने लगने पर, उसकी स्त्री भी
साथ साथ नाच – गाकर
रीझ रीझ कर हँस पड़ी ।

बजाने बजाने पर एक ओर बाजा,
धग धग नाच उठी वह स्त्री,
उठा उठा कर नये हाथ,
नई नई आँखों को दिखलाया ।

दौड़ लगाकर मयूरी के समान,
पीछे हटकर, आँगन में सिर उठाकर,
बंद हस्त – पुष्प को खोल, लेकर
प्रसन्नतावश चुंबन किया ।

खोजने खोजने मिलेगा क्या ?
पतली कमर का अभिनय !
प्रत्यक्ष हुए सामने तीनों तमिल
गरीब जनता के जीवन में ।

75. डाकिया ।

आ रहा है डाकिया, चिट्ठी
देगा कि नहीं ?
आ रहा है डाकिया ।

दे रहा है चिट्ठी, लेकिन, वह
मेरी है या अपने पिता की ?
आ रहा है डाकिया ।

आनेवाली वह चिट्ठी, उनकी लिखी
या सास की लिखी हुई ?
पतिदेव की लिखी भी हो तो
वे आनेवाले हैं या नहीं ?
आ रहा है डाकिया ।

इष्टदेव आनेवाले हैं तो
नाचके समय बिताऊँगी शीघ्र ही,
आज का दिन बीतना सौ साल के बीतने के समान है ।
अगर कल कहें तो वह मेरे मरने का दिन ही होगा ।
आ रहा है डाकिया ।

76. बच्चों का कर्तव्य ।

आज बच्चे हो तुम, फिर भी
कल इस देश का शासन करने पैदा हुए हो ।
आज बच्चे हो तुम ।

अच्छी तरह पढ़ो ! देश के बच्चे !
एक बनके रहो ! ऊँचा सोचो ।
आज बच्चे हो तुम ।

पर्वत के समान शरीर में शक्ति चाहिए ।
अत्याचारों के खिलाफ़ युद्ध करना चाहिए ।
बार बार खाकर स्वादहीन न बनकर,
हर दिन जीवन में नयापन देखना चाहिए ।
आज बच्चे हो तुम ।

कई कलाएँ सीख कर, कई धंधे जानकर,
कविता का रसास्वादन करने की क्षमता पाकर,
अहिर्निश इस देश के लिए मेहनत करो ।
चतुरता से चिल्ला चिल्लाकर पौरुष का स्वागत करो ।
बच्चे हो आज तुम ।

77. आनन्द ।

'भूख' – कहकर आने पर, एक मुट्ठी भर खाना
'खाओ' – कहकर देके देखो ।
भ़ख कहकर ....

दयाहीन तेरे जिय में आनन्द का अंकुर होगा ।
संसार के लिए काम करना ही उत्तम योग है ।
भूख कहकर ....

धर्म से आनेवाला ही आनंद है, हे मेरे बाप!
उसके सिवा सब कुछ दुख है!
होशियारी से जानो कि धर्म क्या है?
श्रुति ग्रन्थों के वचन तत्काल के लिए ठीक थे ।
भूख कहकर ....

मनु के वचन धर्म माने जाते थे इक दिन,
उन्हें परिवर्तन करने का दिन ही तमिल लोगों का पर्व दिन है ।
भूख कहकर ....

78. प्रेम ।

प्रेम बढ़ाओ, सच्चा
प्रेम बढ़ाओ ।

साथ पैदा हुए बच्चे से
प्यार करना है प्रेम से!
संबंध जताकर माँ को खुश करके खुश होना है,
प्रेम की चतुराई से!

प्राप्त भोजन में से थोड़ा, दूसरे
एक छोटे बच्चे को देने,
जब तू ने दौड़ लगायी,
तब तेरे मन में उत्पन्न प्रेम को
तू ने पहचाना ही होगा!

बछड़े को और गाय को एक मिलानेवाला,
विचार करने पर क्या वह प्रेम नहीं है?
तुझको और अपने प्यारे दोस्तों को
परस्पर मिलानेवाला, क्या प्रेम नहीं है?

मद्रास से एक और आदमी आते ही,
चिड़िया की दौड़ के समान, तेरे
आगे आगे बढ़ना, तुझसे आगे
अपने मन का आगे बढ़ना,
क्या यह सारे का सारा प्रेम नहीं है?

79. चंद्रमा ।

पूर्ण चंद्रमा ! सुन्दर चन्द्रमा !
उदित हुआ आकाश में, वह
पुराने की नयी स्मृति
निकल पड़ी जैसी ।

रोनेवाले मुखड़े के हँसने के समान,
कमल के खिलने के समान, ऊपर
घुमाकर फेंकी गयी चाँदी की थाली,
जा चिपक बैठने के समान ।
पूर्ण चंद्रमा ! सुन्दर चंद्रमा ।

अंधे की नज़र की रोशनी के समान
अंधेरे में आकाश – दीप !
हमारे लिए आया है,
नाच – गाकर मन बहलाने ।

पेड़ तले चाँदनी की रोशनी
मोर के परों की शोभा !
गलियों में हर कहीं शीतलता और प्रकाश
में घुली – मिली नजरें ।
पूर्ण चंद्रमा ! सुन्दर चंद्रमा ।

80. जग का उद्देश्य ।

आनन्द ! आनन्द ! जग – जननी नाचती आकर
भरने लगी ह्रदय में
आनन्द ! आनन्द !

सब कुछ अपने में समाया हुआ है ब्रह्मांड़ ने
हर कहीं, अरे रे जननी का महाप्रकाश ।
आनन्द ! आनन्द !

खुले केश आकाश के घन – तिमिर – जाल,
कटि पर उल्लसित पुष्प है चीर ब्रहमांड़ का,
हर कहीं स्पर्श करती नव्य – मुस्कान की दमक,
जननी के नट – पदों झंकृत हैं घन – गर्जन ।
आनन्द ! आनन्द !

विशाल इंद्रधनुष को एक हाथ में,
विशाल धरती को चूर चूर करनेवाले कांतिजाल बाण को दूसरे हाथ में लेकर,
विशाल आँखों में अग्नि पुट जाल भरकर,
नृत्य की क्षमता जानकर दौड़ने लगा वैर – भाव ।
आनन्द ! आनन्द !

घन तेजोमय दीप जैसे चाँद में वह नाचेगी।
नाचकर, आनन्द भरे तमिल लोक गीत गाऐगी।
लघु नक्षत्र जाल की उड़ान में, उसकी
पतली कमर हिलेगी। आँख की जोड़ी डोलेगी।
आनन्द! आनन्द!

ज्ञान ही प्राण वही वह होकर, अन्य
धर्म नामक समस्त वस्तुओं का नाश कहकर,
मन और कर्म एक होकर चलने के लिए
नाचनेवाली जननी को हम जहाँ जहाँ देखें,
आनन्द! आनन्द!

अज्ञान रूपी वैर का नाश, तत्पश्चात क्रूर
दरिद्रता रूपी आग भयभीत होकर दूर भागने,
गुलामी चकनाचूर होने,
नाचनेवाली जननी वह सदा जीवित रहें।
आनन्द! आनन्द!

81. तमिल ।

शुभ्र चंद्रमा और आकाश के समान,
वीर और तेज़ तलवार के समान ।
शुभ्र चंद्रमा और आकाश के समान ।

वर्ण पुष्प और सुगंध के समान,
वीणा और संगीत के समान,
आँख और रोशनी के समान,
क्या मैं और अपनी मधुर तमिल नहीं हैं ?
शुभ्र चंद्रमा और आकाश के समान ।

जग की सुखदायक
मेरी तमिल महान !
पवित्र संगम[1] नामक
झूले में पोषित बालिका !
अपने हाथ में तलवार धरे, इस
समुंदर से घिरे संसार के त्रिराजगण[2] ने
अपने भावों में समेटकर इसे बचाया ।
वह मधुर तमिल और मैं
शुभ्र चंद्रमा और आकाश के समान ।

---

1. संगम, तमिल साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है ।

2. चेर, चोळ और पांडिय राजा, तमिल साहित्य के त्रिराजगण हैं ।

82. नारी शिक्षा ।

महिलाओं से आगे बढ़ा जा सकता है, हमारे
महान तमिल राज्य में, और किसी भी राज्य में ।

जैसे आँखें रास्ता देख सकती हैं ;
जैसे पैर आगे बढ़ सकते हैं,
वैसे महिलाओं से आगे बढ़ा जा सकता है ।

अशिक्षित नारी से होगी बुराई ।
क्या लाभ करेगी वह मूक ?
उत्तम तमिलनाडु नामक कन्या को
अच्छी दशा प्राप्त कराएगी नारी शिक्षा ।
महिलाओं से आगे बढ़ा जा सकता है ।

हे अच्छे माँ – बाप !
अपनी लड़कियों को शिक्षित करो ।
आजकल नारी शिक्षा से
संसार को और भी आगे बढ़ना है ।
महिलाओं से आगे बढ़ा जा सकता है ।

83. बाप, अपनी बेटी को ।

केश बनाकर, फूल लगाकर, तुझे
पाठशाला जाने को कहा तेरी माँ ने ।
शिल्प के समान क्यों वहाँ खड़ी है ? तू
आँसू बहा बहाकर क्यों रोती है ?
पैसों से खरीदी जा सकती है क्या शिक्षा ?
समय समय पर सीखने पर ही वह आएगी !
पहाड़ी – केला है न शिक्षा ? तू
मुँह भर खाएगी, जा, मेरी बेटी !

अशिक्षित नारी अगर तू है, तो यह जानकर
परिहास करेंगे इस गाँव के लोग मेरा !
घड़ी से आगे तू दौड़ ! तू
मेरी आँख है । पड़ोस की लड़कियों के संग में जा !
कठिन लगेगी अब शिक्षा,
सीखने सीखने पर पता लगेगा तब !
समुंदर से घिरा यह तमिलनाडु
' नारी शिक्षा – नारी शिक्षा ' कह रट रहा प्रेम से ।

84. स्त्री - पुरुष समान हैं ।

पुरुष ऊँचा है, स्त्री ऊँची है- ये तत्व
इस विशाल धरती पर कहीं हैं नहीं !
व्यापार कर सकती हैं महिलाएँ !
विमान उड़ा सकती हैं महिलाएँ !

(पुरुष ऊँचा.........)

झूला झुला सकती हैं, यह
हर कोई झुलावें तो झूलेगा !
वीणा भी बजा सकती हैं, क्या वह
कोमल उँगलियों के लिए तरसता है ?
लज्जा और भय चाहिए, ये तो
पुरुष को और स्त्री को भी चाहिए ।

(पुरुष ऊँचा.........)

नारी के वक्षस्थल पर
चीत्कार करनेवाले चीते को देखते समय
बुरी एक दशा यहाँ कहाँ की ? हमारे
दक्षिण राज्य में दासता रहेगी नहीं ।
पवित्र भावना से सेवा करनी चाहिए ।
अनेक तकनीकी शिक्षाएँ सीखनी चाहिए ।

(पुरुष ऊँचा .....)

85. श्रमिकों की जाति ।

शासक नाम से कुछ लोगों को
हे जग! तुमने प्रदान किया क्या ?
दासता से पीड़ित बहु संख्याक जन को
हे जग! क्या तुमने गर्भ में धारण किया ?

तलवार के साथ पैदा किया क्या कुछ लोगों को ?
बिना हथियार के पैदा किया क्या कई लोगों को ?
दिन भर मेहनत करनेवालों को जन्म देनेवाली जननी!
क्या तुमने दुष्ट जनों को भी जन्मा है ?

ऊँच लोग, नामक एक जाति को,
नीच लोग, नामक एक जाति को,
भुजा में, रक्त में, स्थान पाने के रूप में,
हे जग! कहो, क्या तुमने जन्म दिया ?

श्रमिक नाम से एक जाति है क्या ?
मेहनत किये बिना जग के फल को
भोगने एक जाति है क्या सृष्टि में ?
निन्दा रहित जग में लाभ प्रदान करेंगे ।

86. फटने दो पुराने पंचांग को ।

अंधेरे कमरे में है रे संसार । 'जाति
है' कहनेवाला भी है ।
भयभीत करनेवाले धर्म के नेता जी रहे हैं ।
मुँह और हाथ के कलह मिटेंगे किस दिन?
हड़प रहे हैं जो कुछ अपने हाथों लगता है ।
'सारी दौलत हमारी है' – यह जो कहते हैं
उन्हें दूर भगाना ही हेतुवाद है । नहीं तो
आज़ादी और बुराई एक समान हो जाएँगी ।

'सब के लिए सब कुछ है' – यह मान
चल रहा है यह जग ।
अशिक्षितों को देखकर शिक्षा – दान न करनेवाले
बुरे व्यक्तियों के लिए वहाँ है फाँसी का फंदा!
अभाव से पीड़ित वहाँ नहीं है । दूसरों की भलाई
को अपनी कहनेवाला कोई ख़ास व्यक्ति नहीं वहाँ ।
सभी अच्छे हैं उस जग में ।
हमें क्या? फटने दो पुराने पंचांग को ।

87. अनिवार्य शिक्षा ।

सुअर क्यों आया गली में ?
गली में कूड़ा – करकट खाने ।
कौन – सा कूड़ा – करकट गली में ?
यहाँ के लड़कों ने मल विसर्जन किया ।

इसका क्या कारण है ?
यहाँ के माँ – बाप अनागरिक हैं ।
यह नीच व्यवहार होगा कैसे दूर ?
उत्तम ज्ञान का विकास होना है ।

ज्ञान कैसे प्राप्त होगा ?
सभी को पढ़ना चाहिए ।
सब कैसे अधिक पढ़ सकें ?
सतत प्रयत्न से साध्य है ।

कमियों को दूर करने प्रयत्न कैसे करें ?
आम जनता को विप्लव करना चाहिए ।
धब्बे क्यों मिटे नहीं ?
अनिवार्य शिक्षा न मिलने से ।

88. तमिल (भाषी)

अच्छे प्राण, शरीर, नेक तमिल – तीनों

मैं, मैं, मैं ।

विद्या में मुझे जीतने चाहना

क्यों, क्यों, क्यों ?

सर्व प्राणियों की रक्षा करने की भावना मुझे है

देख, देख, देख ।

धन – दौलत में मुझे जीतने चाहनेवाला

कौन, कौन, कौन ?

बोली, शरीर और मन – संसार को थामनेवाले

स्तंभ, स्तंभ, स्तंभ ।

बुद्धिहीन मुझे जीतने चाहना

व्यर्थ, व्यर्थ, व्यर्थ ।

पुराने युग के दुख़ को दूर करनेवाली मेरी

भुजाएँ, भुजाएँ, भुजाएँ ।

बलशाली जो मुझे जीतना चाहता है

चूर, चूर, चूर ।

89. सुन्दरता ।

सुबह की उषा में उसको देखा मैं ने ।
समुंदर की विशालता में, प्रकाशमान किरणों में देखा । उस
चमन में, फलों में, अंकुरों में,
जहाँ जहाँ देखा, मेरी आँखों में वह नज़र आयी!
संध्या के समय प्राची की
माणिक्य – ज्वाला में वह थी ।
वट – वृक्षों से भरे रास्ते में, हर शाखा में, तोतों के
झुन्डों में उस सुन्दर रूपी ने कविता प्रदान की ।

नन्हे बच्चे की नज़रों में प्रकाश बनकर रही,
दीप की आभा में हँस रही, धागा लेकर
खुशबूदार फूलों को बननेवाली संकुचित उँगलियों में,
नाटक रच रही है । अरे, रे! सुदृढ़ भुजाओं पर
हल धरके जानेवाले कृषक की
नयी चाल पर वह मुग्ध हो उठी । पके खेतों
के रंगों पर मेरी नज़र को बिठायी । मेरे
हृदय में समा जाकर आनन्द प्रदान किया ।

दिशाओं में देखा, आकाश में देखा, उसमें
निहित कई चीज़ों में देखा,
चंचल में, अचंचल में देखा, और
सब में सुन्दरता को देखा, नेक आनन्द पाया ।
शोभायमान समस्त चीज़ों में वह शोभा है देख,
वृद्धत्व से न मरनेवाली उसको देख,
प्रेम से देख, वह हर कहीं है देख,
वह भव्य सुन्दरता हो अगर वश में, दुख नहीं ।

90. सागर ।

रेणु की लहरें ।

गाँव के पूरब में स्थित
महासागर के किनारे हर कहीं
नेवले के शरीर के वर्ण के समान
बालू की शैय्या ; उस शैय्या पर
आ गिरती लहर, विद्या –
निकेतन के नवजवान के समान ।
आनन्दविभोर हो उठती ; गिरती ;
लोटती ; देख भाई ! (1)

बालू के किनारे खेकड़े ।

सफेद हंस पक्षियों का झुंड़
खेलकर गिर पड़ने के समान
उठ उठकर लहरें बार बार
किनारे पर चक्कर काटकर गिर पड़तीं !
सफ़ेद लहरें किनारे को छूकर
लौट पड़ने पर छोटे पाँववाले खेकड़ों
के बच्चे खेल – कूदकर
एक महा विस्मय को प्रदान करते । (2)

विप्लव के पश्चात शान्ति
पनपती है, उसी प्रकार,
लहरें सीमा से टकराकर
कल्लोल मचातीं ; पर,
पास की लहरों के उस पार,
सागर मध्य में शान्ति !
महाजल का पान करता आकाश ।
आकाश के मेघजल को पुनः प्राप्त करता महाजल ! (3)

समुद्र का प्रियदर्शी दृश्य ।

विशाल जलाशय, आकाश
से जुड़ी वह सीमा, इधर
एक बने उत्तर और दक्षिण ।
एक विशाल जल को देखने,
दोनों आँखों को पंख बनाकर, हृदय
ऊपर उठता है । पूरे दृश्य को देखने
एक करोड़ पंख चाहिए ।
वाह ! वाह ! करते हुए लौट पड़ेंगे पीछे । (4)

समुंदर और मृदु किरण ।

फूट पड़ीं अरुण किरणें
समुन्दर में ! अरे, रे, हर कहीं ।
गिर पड़ी सुनहरी झड़ी !
बाहर हर कहीं प्रकाशजाल !

गूँजते विशाल जल में
पूर्ण सुनहरे प्रकाश की फैलाव ।
प्राचीन काल की प्रकृति से बनाये जाने वाले
नये चित्रों को देख, भाई ! (5)

अंबुधि और गगन ।

वह किनारा चमन के समान
प्रत्यक्ष होता है । वह चमन
समस्त दिशाओं में प्रत्यक्ष है ।
नवकिरण रूपी सिन्धूर फल को
हस्तगत करने वे बादल
युद्ध करते हैं । काले आकाश में
झूमकर गगन को लाल
बना देते, हैं । देख, भाई ! (6)

निकलनेवाली किरण ।

नवकिरण निकल पड़ी, वहाँ
अँधियारे पर किया क्रोध ।
प्रसन्न हुए समुन्दर के पक्षी ।
उड़ने लगे करतल आलाप करते हुए ।
अदृश्य हुई काली निशा !
फूला आनन्द ह्रदय में ।
नवकिरण सुनहरे रंग को,
हर कहीं छिटकने लगी । (7)

समुद्र गर्जन ।

समुद्र जल, नीला आकाश, आपस में
हाथ मिलाते ! उसके और इसके

बीच है विशाल जल रूपी
मृदु वीणा! उस वीणा पर
आसीन है पवन। वह है वीणा के
तारों को झंकृत कर खुशियों को
देनेवाला कवि! भाई!
तू सुन महासमुद्र का संगीत– गान! (8)

मध्याह्न सागर का दृश्य।

अरुण किरण शिखर पर चढ़कर
अरुण आग को झोंकती है देख!
पीड़ित जनता अपने को
शीतल पवन से ताज़ी बना रही है।
गर्जन करता सागर! इस सारे
संसार को जीवन – बल पूर्ण रूप से
सौंपा सागर ने। अच्छी दौलत को
देनेवाले सागर को देख, भाई! (9)

चाँदनी में समुंदर।

भाई! सुनहरे कपड़े पहनकर, दूसरी
एक नयी मूँगी की साड़ी
अपनी कमर पर पहनी
उस ऊँची सागर – कन्या से
पूछो कि बात क्या है? – सुदूर पर देख
नव चन्द्रिका ने प्रकाश बिखेरा है।
'महान बनके जिया करो' कहकर
अंबुधि को आशीर्वाद दे रही है, भाई! (10)

91. पहाड़ ।

संध्या में आकाश और पहाड़ ।

सोने को पिघलाकर बने
आकाश – नाव में एक
अरुण सूर्य ! माणिक्य – सा
पका फल डूब रहा संध्या में !
सीधे ऊँचे एक पहाड़ पर
मरकत – सुन्दर – काया पर
अनिस्तेज प्रवाल उढ़ाकर
रखा गया है जग के दर्शन के लिए (1)

प्रकाशमान पहाड़ ।

प्रपात, वज्रतोरण है ।
घन लताएँ, हरित रेशम है ।
चिड़ियाँ, सोने के घनीभूत रूप हैं ।
शीतल पुष्प, मणियों का ढेर है ।
चाँद पर गरजती ज्योत्स्ना,
वृषभ पर आक्रमण करनेवाला चीता है ।
सूखे पत्ते सब ज्योतिर्मय स्वर्णिम –
पत्तियों हैं । देख रे तू । (2)

चिड़ियों को भगाना ।

एक एक चिड़िया एक एक मंजरी को चुगने लगी ।
पत्तियों के समान हरे पंखों को हिलाते हुए

पहाड़ पर रहनेवाले ' पुन्नै ' पेड़ के पास
आनेवाली चिड़ियों की झुन्ड़ पर
एक शिल्प – सम नारी ने " पत्थर फेंक कर
नीचे गिरा दिया चिड़िया को, " कहा ।
ज़ोर से मुस्कुराकर दूसरी नारी ने
" कोमल पुन्नै पत्ते को, " कहा । (3)

कुरवन की बेहोशी ।

भ्रम से चिड़िया समझकर
' आतोंड़ै ' फल को देखा उसने ।
ओंठ दबाकर ' कोवै ' ने कहा –
' तेरा विचार गलत है '
' कूद पड़ी री हिरन हिरन ' कहकर
छोटी सी लकड़ी उठायी उसने ।
' उछल पड़ो मत, मैं ही वह हिरन हूँ, '
कहकर एक नारी आ खड़ी होती है । (4)

पहाड़ी सीमा में ।

पहाड़ की ' घाटी ' को पहाड़ से
गिर पड़नेवाले प्रपात के ' जलाशय ' को,
मिट्टी में स्थित कंदमूल को
सूकर उखाड़ने के उत्साह को,
लाल मोतियों और सफ़ेद
सीगों से बने हार पहनकर
खड़ी रहनेवाली मंजर नारियों
के चंद्र – सम मुखों को, देख रे तू । (5)

' आतोंड़ै ' और ' कोवै ' फल विशेष हैं, जो लाल रंग के होते हैं ।

कुरवन नारियाँ (मंजरिन) ।

' अनाज की पूरी मंजरी ' पककर,
लंबे पत्ते भी पककर, खेत
के परिसरों में रथ के समान ऊँचा
एक नया मंच सजाकर, उस पर खड़े होकर,
कुरवन नारियाँ पत्थर उठाकर
लक्ष्य बिठाने की नज़र नील पुष्प के समान है ।
फेंके जानेवाले पत्थर लाल कांत – पुष्प हैं ।
डमरू है कोमल हाथ । (6)

प्रकाशहीन आकाश में पहाड़ का दृश्य ।

अदृश्य हो रहा है सूरज ।
पहाड़ नामक कन्या प्रकाशहीन बनकर,
भरे कोमल वंशी – करों को
फैलाकर ' आओगे कि नहीं '
कह पुकारती है । लघु पक्षी
शोर मचाते हैं । वहाँ एक
नाटा सियार अपनी चिल्लाहट से
' अंधेरा – अंधेरा ' कहता रहता है । (7)

पहाड़ और चाँद ।

स्थित एक काले परदे के पीछे
समाविष्ट स्वर्ण – राशि के समान,
मधुमय तमिल शब्दों में
विचारों के समावेश के समान,

अंधकार ने ढक लिया पहाड़ को!
घड़ियाँ दो बीतीं ।
लौट आया चाँद । पहाड़
प्रत्यक्ष हुआ मोती के समान । (8)

सुन्दराकार पहाड़ ।

नीले घूँघटवाली
चंदा नामक कन्या ने, खूब गरम किये गये
दूध में जमन डालकर,
बड़ी मथनी से मथकर, घड़े
पर निकल पड़े नवनीत को उठाकर,
पहाड़ पर फेंक दिया है ।
जहाँ तक तेरा बस चले, हे सखा!
तू उठाकर खा जा, सारी सुन्दरता को । (9)

मेघाच्छादित पहाड़ ।

हाथियों और मगरों का समूह,
हज़ारों काले बन्दर,
आकाश में निकल पड़े ।
बलपूर्वक बादल एकत्रित हुए,
घड़े में डाले जानेवाले
शराब के समान । पहाड़ को
घेर कर चले! गुलामी हृदय के
धूम्र के समान प्रत्यक्ष हुआ पहाड़ । (10)

92. नदी ।

बिनु जल नदी का रास्ता ।

दोनों ओर मिट्टी की ऊँचाई,
बीच में गहराई, लंबे
एक रास्ते को देखा मैं ने । उस
रास्ते के अंतर्भाग में
छिले हुए सुन्दर केवड़े के फूल के
कोमल पराग के समान, व्याप्त
महा रेणु, उस पर हर कहीं
सूर्य किरणों की अधिकाई को देखा मैं ने । (1)

जाने का रास्ता ।

बालू जलती है । रास्ते पर जानेवाले,
उतरकर और चढ़कर जाते हैं ।
बाँध के किनारे पर की ऊँचाई पर, पास के
घने वृक्षों की छाया में खड़े होकर,
ताप भरे अपने पैरों को ठँड़ा करके,
गली की ओर देखकर गाँव पहुँचते हैं ।
सुन्दर भूप्रदेश के बीच में नदी का
रास्ता, आकाश के इंद्र – धनुष के समान प्रत्यक्ष है । (2)

बाढ़ आने से पहले ।

ताप से जलनेवाले
प्रांगण में शीतल समीर एक

अचानक आ कूदने पर, वहाँ के
पल्लवों का कंपित होना – मैं ने देखा ।
किसी ओर से पक्षी
के झुंड़ इस ओर के
कस्बे के पेड़ों पर आ
बैठने के नयेपन को – देखा मैं ने । (3)

बाढ़ का दृश्य ।

सुनी मैं ने एक ध्वनि! ओह! ओह!
नया जल! महाजल!
ज़र ज़र बहते हुए
आना देखा । आग के रंग में,
मिट्टी का रंग मिलाकर,
विशाल आकाश के सूर्य के ताप को पाकर,
प्रत्यक्ष हुआ । ग्रीष्म के राज्य में,
परिवर्तन लानेवाला विप्लव बाढ़ । (4)

जल का बहना ।

महा मृगराज के करतल लाघव से
गिरे हुए हाथी के समान, अधिक बहता
आता है जल । टकराव से
मिट्टी का किनारा टूट गिरता है ।
पास के वट वृक्ष
गिरे नदी में पीठ के बल!
पक्षी उड़ता ऊपर! जल में
तलवार के समान घूम आती मछली । (5)

जल के आगमन को जानना ।

नदी के किनारे भूमि पर चरते
पशु अपने कर्तव्य के लिए!
धरती पर कान लगाकर,
हाँ, हाँ, नये जल की
लहरों की टकराव का ही शोर मानकर,
बालक अपने अरुण कर उठाकर,
बड़ों को पुकार रहे हैं;
बात एक ही, लेकिन चिल्लाहट है लंबी । (6)

जल का शोर और सौन्दर्य ।

दोनों किनारों पर तैरता जल,
रेंगता प्रकाशमान सुनहरा रूप!
मोतियों की श्रेणियों के समान उफ़ान,
जल की मछली को चुगने आया पक्षी है
मरकत शोभा – सा प्रकाशमान! जल में
तैरते पौधों पर
एक बगुला सफ़ेद कमल के समान ।
इस प्रसन्नता के लिए नहीं है कोई उपमा । (7)

बाढ़ नामक सेना को वृक्षों का आशीर्वाद ।

एक ही प्रकार की वेष – भूषा पहनकर
महा सेना, सीधे खड़े होकर,
अचानक शत्रु पर टूट पड़ती ।
उसी प्रकार नदी की बाढ़ को

रात भर चलते देख,
दोनों किनारों पर स्थित वृक्ष, हार
न होने के लिए, अपने ह्रदय से आशीर्वाद देते हुए,
फूलों की वर्षा करते बाहु – सम डालियों को आगे बढ़ाकर। (8)

किसानों के यत्न ।

नदी की बाढ़ के दर्शनार्थ
कस्बे के लोग वहाँ आ पहुँचे!
स्तुति की नई बाढ़ की!
कहे आशीर्वाद के वचन!
हवा के समान तेज़ जाकर,
खेतों के नाले खोलकर,
मोड़ दिया जल प्रवाह को! और,
सुखाया कुछ नालों को । (9)

नदी की चाल ।

निरोग हुए, दरिद्रता से पार हुए,
शत प्रति शत लोग ।
बिनु आराम के हल उठाकर
खेती के गीत गाने लगे!
बालकों की खुशियों को देखकर
पायल झंकृत पैरों से नदी –
माता चल रही है, ' जग का
वैंभव हो, वैभव हो ' कहती हुई । (10)

93. कमल ।

जल, पत्ते और बूंद ।

दर्पण – सम धरती पर,
दृष्टि – मोहक हरित थाली पर,
अगणित आभायुक्त मुक्ताजाल
की शैया के समान,
सरोवर के जल में व्याप्त
कमल दलों के ऊपर
शुभ्र जल में बूंद को पाया ।
प्रसन्न हो घर पहुँचा । (1)

कमल की छोटी कलियाँ ।

कुछ दिनों के बीतने के पश्चात, मैं
जा पहुँचा सरोवर के किनारे! हरे
पत्तलों पर झरित दुग्ध के समान,
सुरम्य जल और काले नाग
के फन के समान खड़े होकर,
कमल की लघु कलियों का
स्थित होना, मैं ने पाया –
नेत्रानन्द भर पाया । (2)

पके फूल ।

सुन्दर घन तिमिरयुक्त गृह में,
नारीजन अपने रजित हस्तों से

लगाये कलंक – रहित दीप के
सुन्दर प्रकाश के समान,
शीतल पत्तियों की शैया पर,
लाल कमल की लाल कलियों ने
रोग भगाकर, मेरी आँखों को
सौंपा महा भोज ! (3)

विकसती कलियाँ ।

विकसते हरे रेशम को
अपनी काया पर ढककर
क्रमशः अंबर खिसाती नारियाँ, गगन
वीथि को देख देख कर,
हँसते ओंठों के समूह से निसर्गित
माणिक्य की वर्षा के समान
स्थित उन हरे पत्तों पर,
कलियाँ अपनी ओंठों को फैलातीं । (4)

फूलों का दृश्य ।

आकाश के समान जल – प्रदेश,
ऊपर हर कहीं प्रकाशमान,
सफ़ेद मोतियों को देनेवाली
हरी पत्तियों का जंगल, ऊपर
धरती की प्रजा को पसन्न करनेवाला
लाल कमलों का गुलशन, कलेजे को
आँखों में थामकर,
कविता को दर्शाते । (5)

उपमा ।

मुँह के समान कुछ फूल,
'आओ' कह कर पुकारते । हाथों के समान
पवित्र हैं कुछ फूल ।
डूबकर स्नान करके ऊपर
उठनेवाले अच्छे मुख के समान, हृदय को
हरते कुछ फूल !
जल में हज़ारों नारियों के
कोलाहल के समान हैं कुछ फूल ! (6)

अरुण पंखुड़ियाँ ।

एक दल है शिशु का गाल !
एक दल है नज़र के समान ।
एक दल है अपने पति के
रूप का पान कर
फूल उठे हुए ओंठों के समान ! और
एक दल है दुर्जनों का हृदय ।
समेट कर देनेवाला अरुण
कर हस्त है दूसरा एक । (7)

शहद ।

बंद मुँह खोलकर,
मन भर, पूर्व दिनों में
अन्वेषित तमिल भावना को,
आस्वादनार्थ कई लोगों को बाँटनेवाले

अथक कवि के समान,
कली बनकर, फिर विकसित फूल,
अक्षय मधु का दान करते हैं। (8)

भ्रमर।

मधु पीने के लिए भ्रमर गाता।
मधु पान के पश्चात, एक झुन्ड़
एक ओर उड़ जाता! दूसरा एक
विशिष्ट झुन्ड़ क्रीड़ा – केलि
करता आकाश में, एक भ्रमर
'फूल नामक खाट है, मैं हूँ'
कहकर सो जाता।
कोमल पराग को बिखेर देता एक भ्रमर। (9)

कविता की खुशबू।

मुझको मैं ने खोया, आनन्द
जग में जीवन बिताया।
स्वर्णिम धूलि, मलयानिल,
नई खुशबू, भ्रमर का गीत,
सैकड़ों ललित माणिक्य
पक्षियों के समान इकट्ठे फूलों को,
नित दिन देखते रहने पर भी,
अरुचि प्रतीत न होनेवाला आनन्द तांड़व। (10)

94. सूर्य ।

सूर्योदय ।

प्रकाश की वस्तु हो तुम! तुम जग में
एक पदार्थ हो! हृदय में
आनन्द – तांडव पहुँचानेवाले
अनल – पदार्थ हो! गहरे जल में
प्रत्यक्ष होकर निकल पड़े हो! ओह!
आकाश में हर कहीं सोना समेटकर
बिखेरते हो! सागर में उठनेवाली
लहर राशि को प्रकाशमान करते हो तुम । (1)

जग में संवेदन ।

निकल पड़े प्राण – समूह!
अंधेरा नहीं, थकान नहीं,
फूट पड़ा प्रकाश हर कहीं,
जहाँ देखो भावों की बाढ़!
प्रत्यक्ष तुम्हारी हर किरण
सुन्दर ढंग से चढ़ती प्राची पर!
प्रज्वलित कोटि वर्णों में
तुम प्रत्यक्ष हो । हे प्रकाश के राजा! (2)

प्रत्यक्ष सूर्य ।

निकल कर, प्रकाशमान होकर, दीर्घ –
नव – कंठ – केश – पुलकांकित –

हे शेर! गगन मार्ग में
धग – धग जलनेवाले
अक्षय – अनल – तरल – पदार्थ ।
माणिक्य गोला! मृदु
सोने की थाली! आकाश के
बृहत् थाले में स्थित महादीप! (3)

प्रकाशमान सूर्य ।

समुंदर में कोटि कोटि
किरण – हस्तों का आधार !
दीर्घ गगन में कोटि कोटि
हार्थों को बढ़ाकर,
बीच में स्थित पर्वत या जंगल
या मकान या तालाब या नदी को
अगणित प्रकाश पुंज से मर्यादित करते हो ।
हे सूर्य! तुम जुग जुग जिओ! (4)

सूर्य और अंधेरा ।

क्या ही नयापन है? सोने के
नाज़ुक धागे से
बुने गये वस्त्र को पवन से
स्थान – च्युत होकर चंचल
सुजल में किरणों से मिलकर
समुंदर में लोटते हुए देखा!
तुम्हारी किरणों ने अंधेरा नामक फ़नस के फल को
चीरकर प्रकाशमान बीजों को प्रदान किया । (5)

धब्बे मिटाकर सुन्दर बनाया ।

मृदु तुषार कणों को,
हे नव सूर्य! तुम ने हाथ में लेकर खा लिया है ।
अब लहर लहर कर थूक रहे हो
सुन्दरता के समस्त प्रकाश को!
हर पत्ते में सजलता बनाये रखते हो, और
धब्बे मिटाकर उसे सहज बनाते हो ।
हर पर्वत को, हर वन को,
सींचते हो आभायुक्त स्वर्णिम जल से । (6)

हर कहीं वह ।

कमल की हर कली को
स्पर्श किया अपने मृदु ओंठों से!
रसाल पल्लव चंचलता को
मोती युक्त हरियाली में नाचने दिया ।
हाँ, हाँ, सही तो है, मुर्गे के सिर के केशों में
मैं तुम्हारी सुन्दरता को देख रहा हूँ ।
तुम अधिपति हो, प्रकाश के पुत्र हो,
समस्त जनों से स्तुत्य भगवान हो । (7)

सूर्य और उसके कोर्य ।

पंखों में प्राण फूँका है तुम ने!
उड़ने लगे पक्षीगण । नारियों में
धर्माचरण की क्षमता को प्रदान किया है ।
मर्दों के पाषाण – सम – भुजाओं में

निवास कर रहे हो! जंतुजाल में
प्राणों का संचार तुम हो ।
वीरतायुक्त तमिल प्रजा के जीवन में
आनन्द प्रदान करनेवाले हो तुम! (8)

सूरज न हो तो चाँद में रोशनी नहीं ।

जीवित रोशनी तुम्हारी अगर नहीं है तो
अंबर के सारे तारे
ताड़ फल और कर्क फ़ल के समान
चमक खोकर सुन्दरता त्याग बैठेंगे ।
जीवन की व्यर्थथा को दूर करने
फसलों को उगानेवाले कृषक हो तुम!
पीने की गंजी के लिए आधार हो तुम!
शीतलता में ओढ़न हो तुम! (9)

हे सूर्य! जिन्दे रहो ।

आँखों की रोशनी को चमकाकर
उन्हें नीचे झुकानेवाले हे प्रकाश!
हे थकान मिटानेवाले संवेदन!
जग में अंधेरा भगाकर
उसका नाश करते हो ।
धूप में खेलकर प्रसन्न हो रहे हैं हम ।
हे नवजात सूर्य की निजी संपदा !
तुम सकुशल ज़िन्दे रहो । (10)

95. वट वृक्ष ।

निचला भाग, शाखा, कच्चा फल, पत्ता, छाया ।

हज़ार शाखाओं वाला
निचला पेड़ है बड़ा हाथी ।
जा रही हैं उपशाखाएँ आकाश तक ।
प्रत्यक्ष हुए मूँगि जैसे कच्चे फल!
फलों को छाया देकर रक्षा करते
पत्ते सब, करतलों के समान!
सारा गाँव उसकी छाया में समा जाता ।–
इन गुणों से शोभित है बरगद का पेड़ ।

बरगद की जटाएँ और जड़ें ।

खंभों के समान विकसित शाखाओं के
जटाएँ हैं आधार स्तंभ! स्तंभ
वट वृक्ष को घेरे खड़े हैं
अति पराक्रम वीरों के समान! जड़ें
अपनी पूँछों को धरती में जमाती हैं
घन सर्पजाल के समान ।
नीले आसमान को ढकता है वट वृक्ष,
एक आधार पर खड़ा विशाल पंड़ाल! (2)

हरे पत्ते, कोमल जटाएँ ।

उन्नत शाखा के तले
ज्योतिर्मय स्वर्णिम पत्ते!

जड़ें जैसी पतली लकड़ियाँ कुछ गिरतीं नीचे ।
कभी कभी इनका गिर पड़ना
प्रपात के पतन जैसा भी लगता है ।
प्रकाश युक्त आकाश के तले हरे पत्तों का आकाश
एक प्रत्यक्ष होता है । मैं तो कहूँगा कि
ठनेवाला सूर्य किरण जाल । (3)

पेड़ की नींव ।

जहाँ पेड़ की नींव स्थित है, वहाँ
नी है जंगली बिल्ली !
बीच की
शाख के बिलों में
उच्छवास !
उज्जव खोंवाले उल्लू के चीत्कार !
पक्षियों का कोलाहल !
धरती पर हर कहीं सूखे पत्तों की शैया । (4)

चमगीदड़, फलों के गुच्छे, गोन्द, बन्दर, चील ।

ओं पर लटकते
मुँह से लेकर
फलों के गुच्छों को देतीं शाखाएँ !
गोंद वर्षा के समान बूंद बूंद बनके गिरता है ।
गर्वीला बन्दर
छड़ियों को तोड़ता है ; पीछे
की आड़ में बन्दर की पूँछ को
मानकर चील खींचने लगती है । (5)

चिड़ियाँ ।

गुत्थियों में हैं फल के गुच्छे !
लघु शाखा पर बैठी नर – चिड़िया, उन पर
छलांग मारकर, फ़िसलकर, वहाँ
तड़पनेवाली अपनी मादा – चिड़िया पर
धड़ाम से जा गिरता है । प्रेम में
दोंनों का संगम होता है । पासवाले
मीठे फल तब
नर को कड़ुवे लगते हैं । (6)

लघु चिड़ियाँ ।

आकाश के छोटे पक्षी उड़कर
जग में गिरते हुए दिखायी देते हैं । उसी प्रकार
तान गानेवाली लघु चिड़ियाँ
पत्तियों और शाखाओं पर गिरकर, वहाँ की
बिल्ली के दीदों के समान प्रकाशमान
क्रिमियों को खा खाकर
मधु भरी चमेली की कली पर
अपने छोटे पैरों से गुनगुनाकर गाती हैं । (7)

बन्दर का भय ।

शाखा पर एक साँप लटकता रहा,
उसे बरगद की जटा मानकर, बन्दर उसे छूकर,
' चिराग़ को छूनेवाला बालक
भय से कूद पड़ने के समान, '

शाखा पर कूदकर, छलांग मारकर,
नीचेवाली सभी जटाओं को
भ्रम से सर्प समझकर,
शिखर पर जा पहुँचकर, अपनी पूँछ देख लेता है! (8)

पक्षियों का झूला ।

वट से टकराता समीर,
' हिलूँगा क्या मैं ' – कह मुस्कुराकर,
सुन्दर शाखाओं के प्रकंपन से
पेड़ की नींव खड़ी रहती पर्वत के समान!
लोरी गाने कोई न होने के कारण,
रुदन करनेवाले शाखाओं पर के पक्षी
पैर रखने के कारण, शाखाएँ हिल पड़ने पर,
पवन को देते धन्यवाद । (9)

कोयल की दावत ।

वर्षा, बादल, ज्योत्स्ना – इनसे
डरकर कोयल उड़ आकर,
' दीजिए एक कुटिया ' कहकर,
मुँह खोलकर गीत गाने पर,
समृद्ध शाखाएँ अपनी बाहुओं को फैलाकर,
शीतल पत्तियों के हाथों से संभालकर,
फल देकर प्रसन्न करतीं । फिर,
हरे पल्लवों को देता बरगद! (10)

96. कबूतर ।

घोंसले को खोलना, कबूतरों का कूद पड़ना ।

घर के बाहर के प्रांगण में,
वेलन आकर कबूतरों के
घोंसले को खोलने के पहले,
'कुडु कुडु' कूदने का नाद
कानों में पड़ा । घोंसले को
खोलते ही नीचे फ़िसलकर,
झूलते फूलों के समान, कबूतर
कूदकर बाहर आ पड़े । (1)

कबूतरों के कई रंग ।

दो चंद्रमाएँ साथ मिलकर, गाकर,
चारा खाते । लाल ओंठों से
अविकसित नीरजों के समान
एक जोड़ी । कोमल नारियों के
काले बालों के गुंथन के समान,
घने सीसे के समान, फूलों के गुच्छे के समान,
एक ओर दो कदली पुष्पों के समान ।
सुन्दरता सजीव बनकर चरने लगी! (2)

कबूतरों की सामूहिक भोजन की आदत ।

स्थित एक कमल पुष्प
जैसे कि अपनी पंखुड़ियाँ खोल विकसित है ।

गोलाकार में कबूतर इकट्ठे होकर
चारा खाते । उनके जीवन में
मार – काट नहीं, चाकू – भोंक नहीं ;
अलग अलग चरते, पर
भिन्नता नहीं ; ऊँच – नीच नामक
अंधे आचार नहीं । (3)

चाल की शोभा ।

चौड़े मुखवाली एक हांड़ी है
जिसका ऊपरी भाग निचले भाग से समान है ।
उसमें सिर डुबोकर ; पानी मुँह में लेकर
सीधे खड़े हो जाते हैं । स्वर्णिम भौहें
मुस्कुरा उठते । मणियों जैसी नज़रों से
हाव – भाव भरकर देखते! नीचे उतरकर,
प्रसन्नता से घूमकर, जग
भूपति को चलना सिखाते । (4)

कबूतरों का चरित्र ।

एक मादा अपने नर को छोड़ कर
अन्य एक को स्वीकार न करती ।
एक मादा फूल की झड़ी के समान
आभायुक्त सौन्दर्य से खड़ी होने पर,
उसकी ओर मुड़के भी नहीं देखता
दूसरा एक नर – कबूतर! आपस में
एक कबूतर की मृत्यु हो जाने के पश्चात ही
शेष के पास जा पहुँचता अन्य एक । (5)

कबूतरों को मानव से सीख ।

वह (मादा) अकेली, स्वीकार नहीं किया !
वह (नर) उसको दुख देकर
गलती करता है । इस
अनुचित बर्ताव को, प्रेम
भरे कबूतरों के जीवन में
एकाध दुरात्मा जन,
दुख पहुँचाने वाले मानवों
से सीखा होगा । (6)

कबूतरों का प्रेम ।

सिर झुकाकर ' गुड्ड गुड्ड ' करते हुए
अपने को घेर कर घूमनेवाले नर – कबूतरों को
मादा हत्या भरी नज़रों से देखकर,
तिरछी जाकर, फिर लौटकर,
मस्तक नीचा करके, धरती बताकर,
' आओ यहाँ ' कह पुकारती ;
पर्वत दिखाकर स्वागत करें तो
क्या इन्कार कर सकेंगे आशायुक्त जन ? (7)

माँ का प्यार, बाप का प्यार ।

माँ चारा चुगने के बाद
अपने शिशु को घोंसले में देखकर
अपना मुँह खोलते ही ; शिशु
माँ के मुँह में रखता अपनी चोंच को ।

माँ खाये हुए भोजन की उल्टी कर
अपने शिशु की अंतड़ियों को भरती ।
थक जाने पर, बाप खिलाने लगता ।
प्रेम का यह एक उदाहरण! (8)

बालोंवाले कबूतर का नृत्य ।

बालोंवाला कबूतर अपनी पूँछ फैलाता,
छाती को आगे बढ़ाता ;
सुन्दर कंठ को सिकुड़ाता ;
सीधे खड़े हो जाता ; पैरों को
अभ्यास युक्त नाट्य – शास्त्रज्ञ की भाँति
उठा उठा कर, अभिनय करता ।
बालोंवाला कबूतर सफ़ेद शंख के समान है ।
पूँछ है पंखे के समान! (9)

घोंसले में जा दबनेवाले कबूतर ।

झुन्ड़ों में उड़ते आपस में,
चलाये तेज़ तलवार के समान ।
घोंसले में आकर दबते,
बंदी मज़दूरों के समान ।
घोंसले का ताला लगाया
वेलन आकर! रंगों से
चित्रित चित्रों पर
परदा डालकर छिपाने लगा । (10)

97. अंधेरा ।

मुरझाये जीवों का आलिंगन करती ।

दौड़ – धूप करके,
जो मिलता है उसे खाकर, फिर
मुर्झा जाकर रहनेवाले जग
के जन और जीवजाल के पास
तेज़ जाकर तुम उनका आलिंगन करती हो ।
तुम्हारे मणि समान नील पंखों के डोलन में
जग को ढ़कती हो । हे अंधियारी रात!
प्रेम की पतिध्वनि! तुम धन्य हो! (1)

रजनी की दिन की वेशभूषा, रात की वेश भूषा ।

आकाश से धरती तक
विस्मित तुम्हारे शरीर को
अपनी नज़रों में देख रहा हूँ; तुम्हारी
वेश भूषा में निरंतर परिवर्तन
देख रहा हूँ हे रजनी!
दिन का पोशाक, स्वर्णिम साड़ी!
सफ़ेद रेशम, रात की साड़ी!
नगीनेपन के बारे में क्या कहूँ मैं? (2)

अंधेरा, जलाशय, सूर्य झूमता भ्रमर ।

'कहाँ जा रहे हो?' – कहकर
सूर्य से पूछा मैं ने एक दिन;

‘ अंधेरे ’ का नाश करने । ’ कहा ।
‘ शीघ्र जाओ, भाई । ’ कहा मैं ने ।
उसने तेरा पीछा किया ; सोचा कि
तेरा सर्वनाश हो गया । हाय! हे अंधेरे!
हर कहीं फैले जल के समान है तू,
उसमें सूर्य है केवल एक झूमता भ्रमर । (3)

तुम मोतियोंवाला अंबर पहन खड़ी हो ।

चोर को दिखानेवाली
हे निशि – कन्या! कहानी एक सुनो ।
बच्चे सो गये हैं ;
पत्नी पास खड़ी है ;
मन किसी में नहीं लगता ।
इस हालत में उठ खड़ा मैं, तुम हो सामने!
सफ़ैद मोतियों से जड़ित
चादर को बदन पर ओढ़े! (4)

चोटी में चंद्र - पुष्प ।

धरती से अंबर तक
फैले हुए तुम्हारे तन को घुमाकर,
नयन – सुमनों को मोड़कर, तुम खड़ी हो ।
पीछे की ओर काले केश जाल की
चोटी में शोभा दर्शाता
शीतल चंद्रमा । वज्राभूषणों से
तुम्हें अलंकृत देख, मेरा विह्वल हृदय
अपनी स्त्री के संमुख जा खड़ा! (5)

जन्म और मरण ।

आकाश के साथ तुमने जन्म लिया ।
फिर, समुद्र में प्रत्यक्ष हुए ।
मछली से लेकर समस्त शरीर और प्राण
निकल पड़े कहाँ से?
तुम भरपूर हो! हर कहीं!
वस्तु है तो छाया भी तो होगी!
घड़े में हो, दूध में,
हर कहीं हो तुम । (6)

रूप के संकेत को अंधेरा बताता ।

ऊँचे सुन्दर नाक के
दोनों ओर रहते हो । नारियों
के कोमल नयनों के छोर में रहते हो ।
कान के मध्य भाग में,
बाहर भी, रहते हो । नारी के
मुख के संकेत को
जताते हो । तेरी महानता को
चित्रकार जानते हैं । (7)

अंधेरा है सुन्दरता की जड़ ।

बहुदल कमल के समान,
हर दल के निचले भाग में,
लेटे रहते हो तुम! फूल के
ताज़े पत्तों के बीच

भिन्नता को दर्शाते हो! अन्यथा,
कमल की सुन्दरता खत्म हो जाएगी!
स्थित हे अंधेरे! तुम हो हर कहीं ।
हर चीज़ में सुन्दर तुम हो । (8)

अज्ञानता ही अंधेरा ; पर वही है ज्ञानदायक ।

ज्ञान का अर्थ है प्रकाश । हाँ, हाँ!
अज्ञान को कहते हैं अंधेरा । हाँ, हाँ!
अज्ञानता प्रदान करती ज्ञान को ।
क्या ज्ञान से अज्ञानता संभव है?
बालक को काटा बिच्छू ने
अच्छे अंधेरे में चिराग़ की ज़रूरत है ।
उसके लिए माचिस
ढूँढ़ा, मिला नहीं । (9)

अंधेरे की महानता अकथनीय है ।

कहा कि
पेटी में है । चाबी नहीं ।
आठ लोग इस बीच बिच्छू से
काट खाकर तड़पने लगे ।
'सफ़ाई ज़रूर चाहिए' –
इस ज्ञान को
सिखानेवाले हे अच्छे
अंधेरे! तेरी महानता के बारे में क्या कहूँ? (10)

98. छोटा सा गाँव ।

लंबी सड़क मुझे पुकारकर,
सीधे जाने पर,
बीच में एक मोड़ दिखाकर
चली गयी !
मैं ने देखी एक पगडंड़ी ! वहाँ एक
वट – वृक्ष के तले पशुओं को चरानेवाला
गढ़रिया – बालक था ; मुझ से
पूछा उसने – " कौनसा गाँव ? " (1)

' पांड़िचेरी ' कहकर, मैं ने
जाने का रास्ता पूछा । बालक ने कहा, –
" इसको पार करने पर, वहाँ . . . . . की
पुरानी चेरी के उस पार,
उस रास्ते के साथ जाकर,
' ओणम् पच्चेरी ' नाले में
उतरकर, चढ़कर, जाने पर गाँव है
पुकारने की दूरी पर । " (2)

ओस की बूंदें पकी मोतियाँ !
हरे भरे घास के खेतों में,
अलग अलग न होकर,

सिर झुकाए हुए पशु गण।
‘ यहाँ अपना – पराया वाला भाव नहीं ” –
इस तत्व को जताने की भाँति, चरने लगे ।
मीठी मीठी स्वरों में गानेवाले बालक
‘ इच – इच ’ तान बीनने लगे । (3)

पशु समुदाय के बाहरी स्थान पर,
क्रम से दोनों ओर,
बैठी हुई गिलहरियों की पूंछों के समान
बड़े ज्वार के खेत, और
घने कँटीले पौधे!
बाड़ी के अंदर हरे – भरे
मेथी के पौधों में
ज्योतित हैं स्वर्णिम फूल । (4)

पके केले के फलों को
पीठ पर लादकर,
‘ भुखे लोग आओ ’
कहा कदली वन ने ।
छोटी एक ठिकरी हाथ में लेकर,
एक एकड़ कपास उगाने,
एक ही मनुष्य ने जल सींचा,
‘ मेहनत ही धन ’ कहा उसने! (5)

जलाशय से मेंढ़क एक
आ कूद पड़ा । साँप के मुँह में
जा गिरने से, उसको निगलकर
किनारे पर लोटते रहने पर,
मादा चील उसे उड़ा ले जाकर,
पेड़ की बड़ी शाखा पर बैठने पर,
चिड़ियाँ बरगद पर के,
सहम कर ऊपर उड़ने लगीं ! (6)

युवती एक, बुढ़िया
जैसी थी । मुझसे प्रश्न
किया, " मुर्गी के
अंड़े लेने आये हो क्या ? "
खेल ही खेल में, ' चोरी का अंड़ा
गलता नहीं न ? ' कहा मैं ने । सुनकर
वह चिढ़ गयी । फिर भी मेरे शब्दों को
' झूठ ' कहकर मना नहीं किया ! (7)

' कभी अंड़ा खाया क्या
तुमने ? ' पूछा मैं ने ।
' एक भी खाया नहीं,
एक दिन भी खाया नहीं ,
खायी मैं ने खट्ठी गंजी
उसमें मिलाने नमक के लिए, डेढ़ पैसों के लिए
मेरी जान को बेचना पड़ता है ' कहा उसने । (8)

चेरी से थोड़ा बड़ा यह गाँव ।
नारियल के पेड़ घिरे रहते हैं ।
रथ एक । मंदिर एक ।
जुड़ी एक गली । खपरैल
के छत । घोंसले की गाड़ियाँ ।
पशु – शालाओं से भरी गलियाँ,
गाँव है यह, देशवासियों को
अन्न देने वाला अन्नदाता । (9)

सिक्त खेतों के घेरे में, नालों के
स्वच्छ नदी के जल को लेकर सूखे जमीन में भी खेती करते हैं ।
दिन भर खेती करते हैं ।
'क्या करोगे' नामक गीत को
गाया उसने । सामने स्त्री ने,
'बनी गंजी हैं, चखने चटनी है,
हे स्वामी,' कहा । (10)

99. शहर ।

कितनी प्रकार की गलियाँ !
कितने तरह के घर !
किया गया चूने का काम !
महँगी लकड़ी का काम !
वह कौशल ही कुछ और ; और
अपने अपने लिए बनाये गये ।
'हस्तकौशलता विशेष वस्तु है' – इस
सत्य को दरसानेवाले भवन ! (1)

प्रकृति की समस्त जीवों में
मनुष्य ही सब से
श्रेष्ठ, अपने जाने
सत्य को जग के संमुख रखता ।
प्रयत्न भी लगातार,
प्रगति के कार्य करता ।
यह प्रशिक्षण उसी को है ।
इस सत्य को दर्शाता शहर । (2)

बीच में रेल गाड़ी चलती
पैदल चलनेवालों के रास्ते में ।
लगातर चलतीं
अपने आप चलनेवाली गाड़ियाँ ।

समुंदर के किनारे जहाज़ आकर
अगणित माल का ढेर बनातीं ।
अधिक संख्याक जनता चिड़ियों की भाँति
दौड़ लगाती यात्रा के लिए । (3)

वाणिज्य – पदार्थों का बाज़ार !
रखे हुए माल को
' देखो ' कहकर दर्शाकर बेचता
दूकान की सभी चीज़ों को !
व्यर्थ कल के उपयोगार्थ की
विचित्र दर्शन की चीज़ों को
देखने पर, मनुष्य का
कला – नैपुण्य प्रत्यक्ष होने लगता । (4)

मन को पुस्तक से तेज़ कर,
जग में नयेपन को जोड़ने,
लक्ष्यों को इकट्ठे करनेवाले स्थानों पर,
ज्ञानियों के मेले को मैं ने देखा ।
एक लक्ष्य होने पर, दूसरे
लक्ष्य के गुलाम बननेवाले
सफ़ेद वर्दी के लेखकों के
नफ़रत भरे कार्यों को देखा । (5)

झूठ और सच को स्वीकार करनेवाले
ऊँचे वकीलों का
आकाश तक बढ़े न्याय के
आलयों में स्थित होना देखा ।
दुखी महान जनता के लिए
समूह न्याय खोजनेवाले
शक्तिशाली ' कोर्ट ' जब पहुँचा तो
इन्हीं को, वहाँ भी देखा मैं ने । (6)

प्रकृति की शोभा,
गाँवों में देखने मिलती ।
बनावट की सुन्दरता को
शहर दिखाता प्रत्यक्ष ।
प्रयास और पूर्ण मेहनत को
गाँवों में देख रहा हूँ ।
अभ्यास और कला – बोध को
शहर में देख रहा हूँ । (7)

भविष्य में देश की रक्षा करने
जीवित युवकों की भीड़,
त्योहार के मेले के समान
गली के किनारे पुस्तकों सहित,
महा दिन को लाभयुक्त बनाने
महा विद्यालयों की ओर,
एक भी दिन चूके बिना
लगातार खुशी से जाती है । (8)

कलाओं में बढ़कर, देश

की कविताओं में महान बनकर,

स्थित चंद्र मुख संपन्न

नील पुष्प की नज़रोंवाली नारियाँ -

उत्कृष्ट कलाएँ खोजकर

अपने घरों को लौटना मैं ने देखा ।

स्थित मुर्खता नामक प्रेत के

बदन से त्वचा का छिला जाना देखा । (9)

100. भारत की वंदना ।

सुनहरी मंजरियों को उपजानेवाले कलिहानों की नई शोभा
में मूर्तिमान बनकर रहनेवाली हे माता!
तेरी सुन्दरता सदा जीती रहें।

गन्ने का मधुर सार!
कला और समृद्ध धानवाली! तुम सदा जिओ ।
पवन की शीतलता, मधु स्वाद भरे फल,
परोपकार युक्त चमनवाली! तुम सदा जिओ ।

आकाश को स्पर्श करनेवाले हिम पर्वत,
महाजलवाली गंगा मैया, इन नामों से
जग भर पुकारी जानेवाली हे महान कीर्तिमान!
तीस करोड़ लोगों को मुनियों और वीरों के रूप में
प्राप्त हे देवी! तुम वीर नारी हो ।

दुख की वैरता जीतनेवाली!
पर्वत समान भालपटवाली!
आखिरी युग के अंत तक
अविनाश बनकर जीनेवाली, हे वीर काली!
हे माता! तुम जुग जुग जिओ ।
हे माता! तुम जुग जुग जिओ ।